शाश्वत यौगिक खेती

नये युग के लिए नया कदम

ग्राम विकास प्रभाग, राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन एवं
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, आबू पर्वत

जनवरी, 2010

मुद्रक :
ओमशान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, आबू रोड - 307510
फोन - 228125, 228124

© **Copyright :** Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya, Mount Abu, (Raj)
No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

विषय सूची

1. शाश्वत यौगिक खेती के प्रेरणास्त्रोत 4
2. शुभ प्रेरणा सन्देश 5
3. शुभ भावना सन्देश 6
4. शुभ कामना सन्देश 7
5. भूमिका 8
6. ईश्वरीय प्रेरणायें - वृत्ति द्वारा प्रकृति का परिवर्तन करो..... 10
7. शाश्वत यौगिक खेती - योजना की आवश्यकता 13
8. योग के प्रयोग की विधियाँ एवं उनके परिणाम 23
9. जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए - सेंद्रिय एवं जैविक खाद बनाने के तरीके 33
10. फसलों का संरक्षण..... 39
11. खेती के लिए अनुकूल पर्यावरण 43
12. शाश्वत यौगिक खेती करने वाले किसानों प्रति नियम और सुझाव 45
13. अलग-अलग फसलों के लिए ध्यान देने योग्य बातें 47
14. शाश्वत यौगिक खेती द्वारा उत्पादित टमाटर की जीवन
    फसल में तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन 64

शाश्वत यौगिक खेती के प्रेरणास्त्रोत

18 फरवरी 2008 के दिन परमकृषक परमपिता परमात्मा तथा विश्वकर्मा अव्यक्त पिताश्री ब्रह्माबाबा ने आदरणीया दादी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से ग्राम विकास प्रभाग के भाई-बहनों को शाश्वत यौगिक खेती के संदर्भ में प्रेरणा देते हुए कहा था कि.....

'' ....कोई नवीनता कर रहे हैं ना? कर रहे हैं कोई नवीनता? क्या कर रहे हैं? कोई भी बताये (ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन जी ने सुनाया कि योग के प्रयोग के साथ जैविक खेती करने का प्लैन बनाया है) अच्छा है, क्योंकि आजकल जो खेती से निकलता है, उसमें भी प्रॉब्लम्स हैं। तो अच्छा कार्य किया है। एक अपना फायदा योग करेंगे और दूसरा जनता की दुआयें मिलेंगी। तो अच्छा कर रहे हैं। उमंग-उत्साह से कर रहे हैं और करते रहना। अच्छा– मुबारक हो। अच्छा.....''

शुभ प्रेरणा सन्देश

राजयोगिनी दादी जानकी जी
मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़, आबू पर्वत

विश्व नाटक के प्रारम्भिक स्वर्णिम काल में हर मानव सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण दिव्य स्वरूप में था। वहाँ सम्पूर्ण स्वास्थ्य, अखुट समृद्धि, अपार सुख-शान्ति तथा दिव्य-संस्कृति पर आधारित जीवन-शैली थी। इसका मूल रहस्य यह भी था कि उस समय की सात्विक कृषि से स्वादिष्ट, शुद्ध और पौष्टिक अन्न, फल-फूल, सब्जियाँ आदि सहज रूप में प्राप्त होता था। ऐसे नये युग का पुन: निर्माण परमपिता परमात्मा कर रहे हैं...।

ऐसे परिवर्तनकारी समय पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहयोगी संस्था राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन (R.E.R.F.) के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग पर आधारित **''शाश्वत यौगिक खेती योजना - नये युग के लिए नया कदम''** कार्यान्वित किया जा रहा है, जो विशेष रूप में भारत एवं समस्त विश्व के किसान भाई-बहिनों के लिए मार्गदर्शक रूप एवं उपयोगी अवश्य ही होगा। इस कार्य में संलग्न ग्राम विकास के सभी कार्यकर्त्ताओं का मैं तहेदिल से हार्दिक अभिवादन करती हूँ तथा इस नवीनतम योजना की सफलता के लिए कोटि-कोटि शुभ प्रेरणा देते हुए सबको बधाइयां देती हूँ। सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, ऐसी शुभ कामना करती हूँ।

ईश्वरीय सेवा में,

B.K. Janki

(ब्रह्माकुमारी जानकी)

शुभ भावना सन्देश

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी,
सह मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़, आबू पर्वत

वर्तमान समय में किसान भाई-बहनों के जीवन में आध्यात्मिकता और कृषि-पद्धति में प्रकृति के पाँच तत्वों की सतोप्रधानता के साथ-साथ उपलब्ध बीज, खाद तथा साधन-सामग्री का भी सात्विक होना अति आवश्यक है क्योंकि आज, किसान भाई बहिनें कृषि क्षेत्र में अनेक परिस्थितियों एवं समस्याओं का सामना कर रहे हैं, फलस्वरूप खेती द्वारा होने वाली उपज में जितनी शुद्धता, स्वादिष्टता और पौष्टिकता होनी चाहिए उतनी प्राप्त नहीं हो रही है, जिसके परिणाम स्वरूप अनेक प्रकार की मानसिक और शारीरिक व्याधियां बढ़ती जा रही हैं।

ऐसे विकट समय पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहयोगी संस्था राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन (R.E.R.F.) के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा ''शाश्वत यौगिक खेती योजना - नये युग के लिए नया कदम'' प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर के किसान भाई-बहनों को सर्व समस्याओं के कारणों का सहज एवं योग्य समाधान प्राप्त होगा। हमें उम्मीद है कि राजयोग पर आधारित कृषि संस्कृति का नये युग के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए जो पाठ्यक्रम बनाया जा रहा है, इससे कृषक भाई बहिनें नया मार्गदर्शन लेंगे, इसके प्रकाशन पर मैं अपनी हार्दिक शुभ-भावना प्रकट करती हूँ।

ईश्वरीय सेवा में,

Hirdaya Mohini

(ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी)

शुभ कामना संदेश

राजयोगिनी बी.के. मोहिनी जी,
अध्यक्षा, ग्राम विकास प्रभाग
आबू पर्वत

भारत कृषि प्रधान देश है, जहाँ करीब 70 प्रतिशत लोग खेती की व्यवस्था में जुटे हैं। कृषि पर पूरे देश की अर्थव्यवस्था निर्भर करती है। कृषक जिसे अन्नदाता कहा जाता है, उसकी लगन व कड़ी मेहनत से ही अच्छा अन्न, अच्छे फल, फूल, सब्जियां उपलब्ध होते हैं, जो हर मानव की पहली आवश्यकता है। पुरातन काल से मानव जीवन में खेती ही केन्द्र स्थान पर बनी हुई है। उसी के आधार पर भारत के त्योहार, उत्सव आदि बने हुए है। कृषि से ही भारतीय संस्कृति का उद्‌गम (Agriculture is an Ancient Culture) हुआ। इसलिए सम्भवत: अंग्रेजी में Agri अग्रणी कल्चर कहा जाने लगा। कहा जाता है ''जैसा अन्न वैसा मन''। तन और मन दोनों के स्वास्थ्य का आधार अन्न है। तन्दुरुस्ती के लिए शुद्ध, सात्विक अन्न, फल, सब्जियाँ, दूध का उत्पादन अति आवश्यक है।

ग्राम विकास प्रभाग से संलग्न कुछ किसान भाइयों ने परमात्म प्रेरणाओं से प्रेरित होकर अपनी खेती पर सकारात्मक चिंतन तथा योग के प्रयोग किये हैं, जिसके फलस्वरूप उन्हें बहुत अच्छी सफलता मिली है। उनके अनुभवों तथा कृषि विशेषज्ञों के मार्गदर्शन अनुसार प्रभाग की ओर से ''शाश्वत यौगिक खेती : नये युग के लिए नया कदम'' पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। इसमें योग का प्रयोग करने की विधियां, सेन्द्रिय तथा जैविक खाद बनाने वा फसल संरक्षण के भिन्न-भिन्न उपाय बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किये गये हैं। ऐसी यौगिक खेती करने वाले किसान भाई बहिनों के लिए एक नियमावली तथा उन नियमों का पालन करने वाले किसानों के अनुभव इस पुस्तक में प्रकाशित किये जा रहे हैं।

हमें पूरा विश्वास है कि इस पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके बताई हुई विधियों का प्रयोग कर यदि किसान भाई बहिनें निश्चयात्मक बुद्धि से, भावना और विवेक का बैलेन्स रखते हुए खेती करेंगे तो उन्हें 100 प्रतिशत सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

ऐसी शुभ कामना के साथ

ईश्वरीय सेवा में,

बी. के. मोहिनी

(ब्रह्माकुमारी मोहिनी)

भूमिका

इस पृथ्वी पर आदिकाल सतयुग का जब प्रारम्भ हुआ, उस समय की प्रकृति सम्पूर्ण सतोप्रधान थी, खेती द्वारा पौष्टिक शुद्ध अन्न, फल, सब्जियां दूध आदि प्राप्त होते थे, इसलिए हरेक की काया सम्पूर्ण निरोगी थी। हर मानव, मन और तन की शुद्धता के फलस्वरूप दिव्य गुणों से सम्पन्न देवी-देवता कहलाते थे। आपसी स्नेह, सहयोग, सद्भावना, सुख, शान्ति, पवित्रता के कारण भारत सुख-शान्ति, धनधान्य सम्पन्न सोने की चिड़िया थी। सृष्टि चक्र के नियम प्रमाण धीरे-धीरे मनुष्य आत्मा के साथ-साथ प्रकृति के पांचों तत्व भी सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो अवस्था में आते गये, जिसके फलस्वरूप आत्मा और प्रकृति दोनों की शक्तियां क्षीण होती गई। मध्यकाल में आत्मा अपने मूल पवित्र स्वरूप को भूल देह-अभिमान के वशीभूत हो गई, जिससे उसमें सब विकार प्रवेश हुए, फलस्वरूप जनसंख्या में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी होती गयी, आवश्यकतायें बढ़ती गयी। स्वार्थ वृत्ति ने अपनी ऐसी छाया डाली जो प्रकृति के साथ मनुष्य आत्माओं ने खिलवाड़ किया, उसे शोषित किया। दूसरे महायुद्ध के दौरान खेती की उपज बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों का इस्तेमाल किया जाने लगा। वर्तमान काल में अधिक अन्न उपजाने की लालसा से अनेक नई-नई विधियां अपनाई गई। जनसंख्या जैसे बढ़ती गई वैसे खेती पर अनाज उत्पादन का दबाव बढ़ता गया। परिणामस्वरूप धरती माँ की शक्ति भी क्षीण होने लगी। उपजाऊ धरती बंजर-ऊसर आदि में परिवर्तन होने लगी। प्रकृति के सभी तत्व अपना सन्तुलन खोने लगे। लोभ एवं हिंसक वृत्तियों से उपजाये हुए अन्न ने सबकी मनोवृत्तियों को भी हिंसक बना दिया, मन और तन में अनेकानेक नई-नई बीमारियों ने अपना स्थान बना लिया। तत्वों के असंतुलित परिवर्तन से कहीं सूखा, भूकम्प, सुनामी और कहीं पर बाढ़ के हालात बन गये। प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ खेती पर अनेक प्रकार की कीट तथा बीमारियों(रोग) ने भी अपना प्रभाव डाला। यह सब मनुष्य आत्मा के दूषित कर्मों व स्वार्थ वृत्तियों का ही परिणाम है।

'जागतिक अन्न और कृषि संगठन 1988', रोम के निष्कर्ष अनुसार शाश्वत ग्राम विकास करने के लिए नैसर्गिक साधन-सामग्री का योग्य व्यवस्थापन करना अति आवश्यक है। मानव की मूल आवश्यकतायें जैसे अन्न, वस्त्र, निवास सहज प्राप्त हो इसके लिए मानव को सचेत रहना होगा ताकि आने वाली नई पीढ़ी भी सुख-शान्ति से रह सके। इसकी पूर्ति के लिए जमीन, जल, वनस्पति, पशु, पंछी एवं जैविक विविधता का योग्य संवर्धन शाश्वत खेती उत्पादन के लिए पर्यावरण को संतुलित रखना भी जरूरी है। इसलिए आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी मान्य ''तन्त्र ज्ञान'' विकसित करना पड़ेगा।

खेती के अधिक उत्पादन के साथ किसने कैसे उत्पादित किया, यह बात भी स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। अत: अब समय की पुकार है अपने शाश्वत स्वरूप को पहचान कर यौगिक प्रक्रिया को समझकर और अपनाकर शाश्वत यौगिक खेती का प्रयोग व प्रसार करें, जिससे हम पुन: उस स्वर्णिम काल को प्रत्यक्ष रूप दे सकें।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साथ उसकी सहयोगी संस्था राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा पिछले दो वर्षों से भारत वर्ष के किसान भाई बहिनों को

''शाश्वत यौगिक खेती'' के विषय में जागृत किया जा रहा है। इस विद्यालय से संलग्न महाराष्ट्र तथा गुजरात के कई राजयोगी किसान भाई बहनों ने अपनी खेती पर राजयोग की शक्तियों का प्रयोग किया है, साथ-साथ जैविक खाद के नवीन नुस्खे तैयार करके अपनी खेती को बहुत अच्छा उपजाऊ बनाकर खेती कर रहे हैं, जिसके फलस्वरूप वे कम से कम खर्चे में बहुत अच्छी फसल ले रहे हैं। यह नये युग के लिए एक नया कदम है।

परमपिता परमात्मा, जो इस सृष्टि के आदि मध्य अन्त के ज्ञाता, ज्ञान के सागर, सुख शान्ति के दाता हैं, अपने बच्चों को पुन: राजयोग सिखलाकर उनकी मनोवृत्तियों में परिवर्तन ला रहे हैं। उनकी श्रेष्ठ मत है - *''बच्चे अपने स्वरूप को पहचानो, स्वधर्म में स्थित होकर मुझ ज्ञान सूर्य पिता परमात्मा के साथ अपना बुद्धियोग जोड़ लो तो मेरी शक्तियां आपके संकल्पों को शक्ति सम्पन्न बना देंगी। फिर आपके शुद्ध श्रेष्ठ संकल्प हर सिद्धि को प्राप्त करेंगे। असम्भव भी सम्भव हो जायेगा। यह कोई चमत्कार नहीं लेकिन यह आध्यात्मिक कृषि विज्ञान है। इसमें परमात्म शक्ति और आत्म शक्ति के संकल्पों का श्रेष्ठतम प्रयोग है, जो शुद्ध श्रेष्ठ शक्तिशाली भावनाओं के प्रकम्पन द्वारा सम्पन्न हो सकता है।''*

अत: अब समय आ गया है - अपने अन्नदाता किसानों को जागृत करने का। वे अपने श्रेष्ठ स्वमान और शक्ति को पहचानें। शुभ भावना है कि सर्वप्रथम किसान वर्ग राजयोग की विधि सीखकर अपनी खेती के कुछ भाग में उसका प्रयोग करके सफलता सम्पन्न अनुभवी बनें। उसमें किसी भी प्रकार की रासायनिक खाद वा कीटनाशक जहरीली दवाओं का प्रयोग किये बिना घर में तैयार की हुई जैविक खाद द्वारा खेती को सशक्त बनायें फिर उसमें योग की सकाश का, आत्मा के सातों गुणों का एकाग्रता और दृढ़ता के साथ प्रयोग करके अपने निजी उपयोग में आने वाले शुद्ध, सात्विक, अन्न, फल वा सब्जियां उपजायें। इसमें सफलता प्राप्त करने के पश्चात् अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले किसान भाई बहिनों को भी प्रेरणा दें ताकि हर एक आध्यात्मिक शक्तियों को पहचाने और **सम्पूर्ण विश्व एवं भारत देश पुन: धनधान्य सम्पन्न बन विश्व गुरु की पदवी प्राप्त करे तथा परमात्म कार्य की प्रत्यक्षता हो।**

इसी शुभ भावना से यह ''शाश्वत यौगिक खेती'' नामक पुस्तक तैयार की गयी है। आशा है किसान भाई-बहनों को इस पुस्तक द्वारा खेती करने की नवीन विधि की सही जानकारी प्राप्त होगी।

इसी शुभ भावना के साथ,

B.K. Raju

(बी.के. राजू)
मुख्यालय संयोजक, ग्राम विकास प्रभाग,
आबू पर्वत

ब्र.कु. सरला

(बी.के. सरला)
राष्ट्रीय संयोजिका, ग्राम विकास प्रभाग,
आबू पर्वत

ईश्वरीय प्रेरणायें

वृत्ति द्वारा प्रकृति का परिवर्तन करो

1. किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने का सबसे सहज साधन है - वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना। जैसे सांइस का राकेट फास्ट जाता है, वैसे आपकी रूहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते हो।
2. आपकी वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में, कोई भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति को सदा स्वच्छ रखो। व्यर्थ वा निगेटिव वृत्ति को पहले पॉजिटिव बनाओ, मन में कोई भी खिटखिट न हो तब शुभ वृत्ति से सेवा कर सकेंगे।
3. निमित्त आत्मा सेकण्ड में वेस्ट को खत्म कर बेस्ट का प्रभाव वायुमण्डल में फैलाये तब मन्सा सेवा का रेसपान्ड प्रैक्टिकल रूप में दिखाई देगा। सिर्फ विस्तार को शार्ट करते मन्सा की शक्तियों को बढ़ाओ और उनका प्रयोग करो।
4. रोज़ सारे दिन में भिन्न-भिन्न टाइम पर मन की एक्सरसाइज 5-5 मिनट की करो। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी और निराकारी। इससे मन्सा शक्तिशाली बन जायेगी और शक्तिशाली मन्सा जब और जहाँ चाहे वहाँ अपना प्रभाव डाल सकती है।
5. अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है। वृत्ति और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है और वह वायुमण्डल प्रकृति को परिवर्तन करता है। लेकिन वृत्ति को सदा शुभ रखना। कोई भी निगेटिव बात सुनो तो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देना तब वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की सेवा फास्ट गति से कर सकेंगे।
6. विश्व परिवर्तन वा प्रकृति का परिवर्तन करना है तो दुआ शब्द याद रखना - जब आपके जड़ चित्र दुआयें दे रहे हैं, वृत्ति से हर एक की कामनायें पूरी कर रहे हैं तो आप चैतन्य में क्या नहीं कर सकते हो। सिर्फ दुआ दो दुआ लो।
7. आप एक-एक मास्टर सर्वशक्तिवान के संकल्प में इतनी ताकत है जो चाहो वह हो सकता है, सिर्फ दृढ़ता की चाबी को समय पर सदा यूज़ करो।
8. साइलेन्स की शक्ति से कठोर धरनी का परिवर्तन कर सकते हो। संकल्प भी सृष्टि बना देता है। तो शुभ भावना के संकल्प से, अपनी चढ़ती कला के वायब्रेशन द्वारा धरती का परिवर्तन करते चलो। यह साइलेन्स की शक्ति सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेंगी।
9. साइलेन्स की शक्तिशाली शुभ-भावना के प्रत्यक्ष प्रमाण आगे चलकर अनुभव करते रहेंगे। सिर्फ इसके लिए एकाग्रता अर्थात् रूहानियत में रहने का, अन्तर्मुखी रहने का व्रत लो तब आत्माओं

को ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखा सकेंगे।

10. आप सबने जो पान का बीड़ा उठाया है कि पवित्रता द्वारा हम प्रकृति को भी पावन करेंगे। तो बापदादा चाहते हैं कि सारे विश्व में हर एक बच्चा लगाव मुक्त बने – चाहे साधनों से, चाहे व्यक्ति से।

11. वाणी के साथ-साथ जब वृत्ति द्वारा सेवा करेंगे तब इस डबल सेवा से पावरफुल वायुमण्डल बनेगा और प्रकृति दासी बनती जायेगी। वह हलचल करने के बजाए दासी बनकर सेवा करेगी।

12. दिव्य बुद्धि ऐसा श्रेष्ठ यन्त्र है जो इस यन्त्र द्वारा व्यक्ति तो क्या, प्रकृति को भी दिव्य बना सकते हो। व्यक्ति को दिव्य बनाने से प्रकृति के ऊपर स्वत: ही प्रभाव पड़ता जायेगा। दिव्य बुद्धि सदा इमर्ज रूप में रहे तो प्रकृति को भी परिवर्तन कर सकते हो, यह परमात्म-वरदान है।

13. आप लोगों की अपनी स्थिति जब न्यारी और प्यारी होगी तब पावरफुल-शक्तिशाली लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति में स्थित होकर वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा कर सकेंगे।

14. प्रयोगी आत्मा की पहली निशानी है–संस्कार के ऊपर सदा प्रयोग में विजयी। दूसरी निशानी–प्रकृति द्वारा आने वाली परिस्थितियों पर योग के प्रयोग द्वारा विजयी।

15. आप ब्राह्मण आत्मायें पुरुषोत्तम आत्मायें हो। प्रकृति पुरुषोत्तम आत्माओं की दासी है। अभी आप न सिर्फ़ आत्माओं का परिवर्तन करते हो लेकिन प्रकृति का भी परिवर्तन करते हो। जितना-जितना आपके शक्तिशाली सतोप्रधान वायब्रेशन होंगे उतना प्रकृति और मनुष्यात्माओं की वृत्ति दोनों ही चेंज हो जायेंगी। मनुष्यात्माओं को वृत्ति से चेंज करना है और प्रकृति को वायब्रेशन द्वारा परिवर्तन करना है। तो परिवर्तन करने वालों की वृत्ति सदा ही शक्तिशाली चाहिए, साधारण नहीं।

16. आपकी पवित्र दृष्टि से विश्व की आत्मायें और प्रकृति – दोनों पवित्र बन रही हैं। आपकी दृष्टि से सृष्टि बदल रही है। आपके श्रेष्ठ कर्मों से श्रेष्ठाचारी दुनिया बन रही है।

17. आप बच्चे याद के बल से विश्व को परिवर्तन करते हो। याद माना शान्ति की शक्ति, इससे व्यक्ति भी बदल जायेंगे तो प्रकृति भी बदल जायेगी। तो व्यक्तियों को भी बदलना है और साथ में प्रकृति को भी बदलना है। प्रकृति को मुख का कोर्स तो नहीं करायेंगे। व्यक्तियों को तो कोर्स करा देते हो लेकिन प्रकृति को योगबल से ही बदलेंगे।

18. आपके अन्दर सिर्फ एक ही संकल्प हो ''बाप और आप'' इसी को ही योग कहते हैं। जब पॉवरफुल योग में बैठेंगे तब और सब संकल्प शान्त हो जायेंगे। बाप के मिलन की अनुभूति के

सिवाय और सब संकल्प समा जायेंगे। संकल्पों का विस्तार न हो, स्टॉप कहो और स्टॉप हो जाएं, फुल ब्रेक लगे। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो।

19. आपकी भावना का फल विश्व की आत्माओं को परिवर्तन कर रहा है और आगे चल प्रकृति सहित परिवर्तन हो जायेगा। आप आत्माओं की श्रेष्ठ भावना इतना श्रेष्ठ फल प्राप्त कराने वाली है!

20. आप अपनी शुभ भावना का महत्व जानते हो, अपनी शुभभावना को साधारण रीति से कार्य में लगाते चल रहे हो वा महत्व जानकर चलते हो? दुनिया वाले भी शुभ भावना शब्द कहते हैं। लेकिन आपकी शुभ भावना सिर्फ शुभ नहीं लेकिन शक्तिशाली भी है क्योंकि आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माएं हो, संगमयुग को ड्रामा अनुसार प्रत्यक्ष फल प्राप्त होने का वरदान है। सिर्फ इसके महत्व को जानकर इसका प्रयोग करो।

21. जैसे साइंस के साधन दूर बैठे आत्माओं से समीप का सम्बन्ध कराने के निमित्त बन जाते हैं, आपकी आवाज पहुंच जाती है, आपका संदेश पहुंच जाता है, दृश्य पहुंच जाता है। तो जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए समीपता का फल दे सकती है तो आपके साइलेन्स की शक्तिशाली शुभ भावना दूर बैठे भी फल नहीं देगी! सिर्फ इसके लिए शान्ति की शक्ति जमा करो।

22. शुभ भावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प। सब शक्तियों से संकल्प की गति तीव्र है। जितने भी साइंस ने तीव्रगति के साधन बनाये हैं, उन सबसे तीव्रगति संकल्प की है। तो आप मास्टर विश्व कल्याणकारी आत्माओं की यह सूक्ष्म मन्सा सेवा प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करायेगी, इससे समय भी कम और साधन भी कम, सम्पत्ति भी कम लगेगी। इसके लिए सिर्फ मन और बुद्धि सदा फ्री चाहिए। विशेष अटेन्शन हो ''एकांत और एकाग्रता''।

23. एकांतप्रिय आत्मा ऐसी शक्तिशाली बन जाती है जो अपनी सूक्ष्म शक्तियां - मन, बुद्धि को जिस समय चाहे, जहाँ चाहे एकाग्र कर कमाल के कार्य कर सकती है। आप प्रकृति के भी मालिक हो, आपके परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन होना है। इस समय आप सतोप्रधान बन रहे हो तो प्रकृति भी तमो से सतो में परिवर्तन हो रही है। इसी नशे और शुभ भावना के संकल्प द्वारा योग का प्रयोग करो।

शाश्वत यौगिक खेती - योजना की आवश्यकता

संसार में हरेक मनुष्य चाहता है कि मेरा जीवन सात्विक हो, मैं अच्छे कार्य करूँ, महान बनूँ और मेरे जीवन में शान्ति बनी रहे। परन्तु इच्छा होना एक बात है और उस इच्छा को साकार करने के लिए पुरुषार्थ करना दूसरी बात है। देखने में आता है कि लोग चाहते हैं कुछ और, करते हैं कुछ और। चाहते हैं शान्ति, परन्तु परिस्थिति वश, संस्कार वश कर्म ऐसे कर बैठते हैं जिस कारण उनके अपने और दूसरों के जीवन में अशान्ति पैदा हो जाती है। चाहते हैं स्नेह और प्रेम लेकिन बात ऐसी कर लेते हैं जिससे गलतफहमी, मनमुटाव, संघर्ष और नफरत को बढ़ावा मिलता है। चाहते हैं कि स्वास्थ्य अच्छा हो परन्तु सात्विक अन्न की कमी के कारण शरीर में स्वास्थ्य नाशक, रोगोत्पादक तथा उत्तेजनात्मक विषैले तत्व इकट्ठे होने लगते हैं, जो न केवल शरीर के लिए हानिकारक होते हैं बल्कि मानसिक सन्तुलन को भी बिगाड़ते हैं, निर्णयशक्ति को विचलित कर देते हैं, मानसिक आवेग को अनियंत्रित, असन्तुलित, अमर्यादित या दिशा भ्रष्ट कर देते हैं। इसलिए मनुष्य के आहार का उसके आचार, विचार और व्यवहार से गहरा सम्बन्ध है।

प्राचीन काल से यह कहा जाता है कि अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है और मन का स्वास्थ्य व रोगों से गहरा सम्बन्ध है। कहते हैं ''जैसा अन्न वैसा मन, जैसा मन वैसा तन।'' इसलिए तनावमुक्त, व्यसनमुक्त, चरित्र सम्पन्न जीवन जीने के लिए भोजन का अकथनीय महत्व है। सभी मनुष्यों का लक्ष्य यही है कि हम शान्त, शीतल और सात्विक वृत्ति को धारण कर सुखमय व आनन्दित जीवन जियें और इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मन को वश करना आवश्यक है, मन को वश करने के लिए हमें अन्न की परहेज पर ध्यान देना बहुत जरूरी है।

अनाज का उत्पादन किस विधि से हो, इस पर विचार करना आवश्यक है। विश्व भर में खेती में अनाज, फल की उत्पादकता के लिए विविध प्रयोजन किये जाते हैं, जैसे –

(1) नैसर्गिक खेती पद्धति :-

इसमें जमीन की जुताई नहीं की जाती है, हल नहीं चलाया जाता है। किसी भी प्रकार की खाद बाहर से लाकर नहीं डाली जाती है। निराई, खरपतवार निकालते समय कोई हथियार तथा दवाइयों का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। खेती में से अनाज निकालने के बाद जो अनावश्यक (वेस्ट) भाग है उसे जमीन पर आच्छादित करते हैं और दल्हनी (द्विदल) फसल (जैसे कि मूँग, उड़द, मूँगफली, सोयाबीन आदि) लेते है।

(2) सेन्द्रिय खेती पद्धति :-

जमीन की पौष्टिकता और उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए कम समय में सड़ने वाले (कम्पोस्ट

होने वाले) जो भी पदार्थ हैं उसे जमीन में मिला देते हैं या ऊपर आच्छादित कर बाद में हल चलाकर जमीन में मिला देते हैं। कम्पोस्ट खाद, केंचुए की खाद, हरी खाद, सेंद्रिय खाद इत्यादि का इस्तेमाल करते हैं। कुछेक पेड़ पौधों को भी लगाना आवश्यक है। कुदरत के नियमानुसार चलकर उत्पादन लेते हैं। जैविक कीटनाशक का इस्तेमाल करते हैं।

(3) जैविक खेती पद्धति :-

सेंद्रिय खेती पद्धति और जैविक खेती पद्धति में ज्यादा अन्तर नहीं है। जमीन में अनेक प्रकार के जीवाणु होते हैं, उनमें से कुछएक को संवर्धक द्वारा तैयार करते हैं। जैसे नत्र (नाइट्रोजन) स्थिर करने वाले जीवाणु, स्फुरद की उपलब्धता कराने वाले जीवाणु, सेंद्रिय पदार्थों का विघटन करने वाले जीवाणु, फफूंदीरोधक जीवाणु इत्यादि। फसल को जिस समय जिन जीवाणुओं की आवश्यकता होती है वे जीवाणु जमीन में मिला देते हैं।

(4) रासायनिक खेती पद्धति :-

इस खेती पद्धति में जमीन में रासायनिक खाद डालते हैं। दवाइयाँ छिड़ककर खरपतवार (घासफूस) को नष्ट करते हैं। जहरीली दवाइयों का इस्तेमाल कर कीट और रोग का नियंत्रण करते हैं जिस कारण कुदरती नियमों में बाधा आती है।

(5) शाश्वत यौगिक खेती पद्धति :-

योग के माध्यम से परमात्म शक्ति एवं श्रेष्ठ संकल्पों के प्रकंपनो द्वारा नैसर्गिक साधन सम्पत्तियों का गुणात्मक दर्जा बढ़ाते हुए, उत्पादन क्षमता बढ़ाई जाती है। इस प्रकार से खेती करने में कम खर्च, कम श्रम लगता है। प्रकृति सुखदायी और वातावरण शुद्ध बनता है। अनाज भी सात्विक, ज्यादा पौष्टिकतायुक्त मिलता है।

आज पूरे विश्व में अनाज की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए, रासायनिक खाद और कीटनाशकों का अत्यधिक इस्तेमाल हो रहा हैं जिसके अनेकानेक दुष्परिणाम दिखाई दे रहे हैं। रासायनिक खाद और कीटनाशक के अधिक प्रयोग से पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है, प्रदूषण बढ़ रहा है, फसलों की रोग प्रतिकारक शक्ति कम हो रही है, अनाज की पौष्टिकता खत्म हो रही है, जमीन की ताकत कम हो रही है। अनाज की पौष्टिकता कम होने और विषैले तत्व शरीर में आने के कारण शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति कम हो गई है और अनेक बीमारियाँ बढ़ रही हैं।

रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाइयों के इस्तेमाल करने से पत्तों के अन्दर प्रथिनों

(पेशियों) की रचना बिगड़ जाती है, वनस्पति के अन्दर की ऊर्जा की गति कम यानि अकार्यक्षम होती है इसलिए कई प्रकार के रोग बढ़ रहे हैं। ऐसी वनस्पतियों पर उपजीविका करने वाले प्राणी तथा मानव को असाध्य बीमारियाँ हो रही हैं। जमीन में नये-नये घास-फूस (खरपतवार) का प्रादुर्भाव हो रहा है और इन सबकी वजह से अनाज का उत्पादन अपेक्षा से कम हो रहा है परिणामस्वरूप किसानों के जीवन में दु:ख, अशान्ति, तनाव बढ़ता जा रहा है और मानसिक सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है जिस कारण अनेक शारीरिक एवं मानसिक बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। कई बार किसान खुदकुशी के लिए भी प्रेरित होता है।

रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयों के प्रयोग से होने वाली बीमारियाँ

इस क्षेत्र के संशोधकों तथा जानकारों द्वारा ऐसी भयावह जानकारी दी हुई है कि भारत में रहने वाले हर व्यक्ति के पेट में लगभग एक मिलीग्राम डी.डी.टी., बी.एच.सी. जैसी कीटनाशक दवाइयों का अंश जाता है। इसके परिणाम से ब्रेन, किडनी जैसे नाजुक अवयवों में बड़े पैमाने पर विकृतियाँ बढ़ रही हैं, कैन्सर जैसी बीमारियाँ भी बढ़ती जा रही हैं।

डॉ. प्रकाशचंद्र नामक वैज्ञानिक ने यह स्पष्ट किया है कि ऐसी बीमारियाँ भारत के लाखों लोगों में बढ़ रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के द्वारा भी ऐसे खतरे की चेतावनी पहले से ही दी हुई है।

लखनऊ स्थित 'किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज और टॉक्सीकॉलोजी रिसर्च सेन्टर' द्वारा डी.डी.टी. और मेलाथियॉन जैसी जहरीली कीटनाशक दवाइयाँ छिड़कने वाले व्यक्तियों की जब जाँच की गई तब देखने में आया कि उसमें से 50 प्रतिशत से भी ज्यादा लोगों में सिरदर्द, चिंता, निद्रानाश, निराशा, विस्मृति, दृष्टिदोष इत्यादि बीमारियों का प्रमाण बढ़ गया था।

हैदराबाद स्थित एक हॉस्पिटल में प्रसूति वार्ड से प्राप्त जानकारी से यह स्पष्ट हुआ है कि अकाले प्रसूति और गर्भ में भ्रूण का मृत होना इसका सम्बन्ध जहरीले कीटनाशकों से है। ऐसी माताओं के खून में डी.डी.टी. और बी.एच.सी की मात्रा ज्यादा पाई गई।

सन् 1977 में कर्नाटक के मालनाड गाँव में घटी हुई घटना 'हंडी गोडू सिन्ड्रोम' नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ पर धान (चावल) की खेती में बड़े पैमाने पर पेस्टीसाइड का इस्तेमाल किया था। इसमें से कुछ मात्रा पानी के साथ बहकर नीचे वाली खेती में चली गई थी जहाँ पानी जमा हुआ था, उसमें बहुत सारे केकड़े थे। वहाँ पर काम करनेवाले कुछ मजदूरों ने उन केकड़ों को पकड़कर खा लिया इससे

करीब 200 लोगों को लकवा (पैरालीसिस) हो गया। जाँच के दौरान यह पता चला कि उन केकड़ों के शरीर में चावल की खेती में इस्तेमाल किये हुए पेस्टीसाइड्स के अंश (रेसीड्यूज) थे, जिस कारण सभी लोगों को एक साथ लकवा (पैरालीसिस) हुआ।

'अमेरिगो मॉस्का' नामक इटालियन रसायन वैज्ञानिक ने कहा है कि खेती में इस्तेमाल की जाने वाली कीटनाशक, जंतुनाशक दवाइयाँ इतनी भयानक हैं जो जीन्स में बदलाव करने वाली अणु-विस्फोटक से निर्माण होने वाली रेडियो एक्टीव मूलद्रव्य के समान है। झेलिब, फल्तान, कप्तान जैसी फफूंदीनाशक दवाइयों के इस्तेमाल से हर वर्ष इतना नुकसान होता है, जितना 14 मैग्नेट के 19 हाइड्रोजन बॉम्ब गिरने पर नुकसान होता है। इसके परिणामस्वरूप अमेरिका में 15 प्रतिशत बालक मानसिक विकलांगता के साथ जन्म ले रहे हैं। इसके अलावा वनस्पति, प्राणी और जमीन में जो बीमारियाँ और प्रदूषण बढ़ रहा है इसका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं इतना यह भयानक है।

क्लोरिनेटेड, हाइड्रोकार्बन, डी.डी.टी., पी.सी.बी. के द्वारा अमेरिका के युवकों में नपुंसकता का प्रमाण बढ़ रहा है। साथ ही हाई ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक, कैन्सर व एड्स जैसी बीमारियों का भी मूल स्त्रोत रासायनिक खाद तथा कीटनाशक का गलत प्रयोग ही है।

कर्मों की गुह्य गति

खेती में अनाज की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए लोभवश रासायनिक खाद डालते हैं और कीट आने के बाद क्रोधित होकर बुरे विचारों के साथ कीटनाशक छिड़कते हैं। जब कोई कीट फसल पर दिखाई देती है तो पहले मन में विचार आता है कि कुछ भी करके इसे मारकर नष्ट करना ही है, नहीं तो नुकसान होगा। ऐसे सोचकर जब दवाइयाँ छिड़कते हैं तो इसका फसल तथा अनाज पर बुरा असर होता है और ऐसा अनाज खाने वाले व्यक्तियों में भी ऐसे ही बुरे विचार आने लगते हैं। थोड़ा भी कुछ डिस्टर्बेन्स होता है तो उनको तुरन्त गुस्सा आता है, लड़ने-झगड़ने लगते हैं।

रासायनिक खाद के गलत प्रयोग के कारण जमीन में से कई सारे जीवाणु मारे जाते हैं, जिससे प्रकृति को दु:ख मिलता है, कुदरती नियमों में बाधा आती है और कीटनाशक छिड़कने से कीट तड़फ-तड़फकर मरते हैं। इसी तरह कीटकों को विष पिलाकर मारना यह भी तो पाप कर्म ही है। वास्तव में कोई भी प्रकार के कीट को मारना या नष्ट करना, यह हम मनुष्य आत्माओं का काम नहीं है, परन्तु उस कीट को नष्ट करने की जिम्मेवारी कुदरत ने बनाकर रखी है अर्थात् कई और कीट

हैं जो उस पर उपजीविका चला सके।

कर्मों की गुह्य गति पर विचार करने से यह पता चलता है कि हमारे जीवन में जो भी समस्यायें या परिस्थितियाँ आती हैं, उनके पीछे एक ही कारण है और वह कारण है हमारे ही किये हुए बुरे कर्म। अगर कोई बीमारी आती है तो यह भी हिसाब-किताब है अर्थात् प्रकृति के नियमों में हमने रुकावट डाली है, प्रकृति को दु:ख दिया है।

महाभारत में एक आख्यान है कि जब भीष्मपितामह जख्मी होकर शरशैय्या पर लेटे थे, तब उन्होंने श्रीकृष्ण जी को पूछा कि मैंने ऐसा कौन-सा विकर्म किया जो मुझे बाणों की शैय्या पर लेटे शरीर छोड़ना पड़ रहा है? तब श्रीकृष्ण जी ने भीष्म जी को बताया कि एक बार भीष्म जी रथ में बैठकर गुजर रहे थे तब उनके सामने एक साँप आया जो रथ के नीचे आने से मरने वाला था। उस साँप को मरने से बचाने के लिए भीष्मपितामह जी ने साँप को उठाकर बाजू में फेंक दिया और भीष्म जी चले गये। उस समय वह साँप काँटों की झाड़ी पर जा गिरा इसलिए साँप हिल नहीं पाया, चल न सका और वह वहाँ ही मर गया। परिणामस्वरूप भीष्म जी को भी अन्तिम समय पर इसी तरह शरीर छोड़ना पड़ा।

इस आख्यान को देखते हुए कर्मों की गुह्य गति यह समझाती है कि वर्तमान समय बहुत सारे लोग कहते हैं कि हमने अपने जीवन में इतना अच्छा कार्य किया, इतना-इतना कमाया, हमने आज तक कोई भी बुरा कर्म नहीं किया, किसी को भी दु:ख नहीं दिया। लेकिन ऐसे व्यक्तियों के जीवन में भी ऐसी कुछ परिस्थिति आती है जो वो लोग भी दु:ख, अशान्ति, तनाव महसूस करने लगते हैं। तो इसका कारण भी यही है कि उन्होंने कोई ऐसे कर्म किये हैं, जिसका यह फल है। चाहे कोई भी बीमारी हो या समस्या हो, उसके लिये किसी दूसरे को दोषी ठहराने की बात ही नहीं उठती है।

इसलिए वर्तमान समय जो भी कर्म हम कर रहे हैं उससे प्रकृति सहित सर्व को, जरा भी जाने-अन्जाने में भी किसी को दु:ख न हो इस पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। कुदरती नियमों को थोड़ा भी डिस्टर्ब करना मनुष्य के अधिकार में नहीं है फिर भी अगर करेंगे तो हिसाब तो देना ही पड़ेगा।

और भी गहराई में जाकर सोचने की बात है कि जब भीष्मपितामह जी जख्मी होकर शरशैया पर लेटे थे तो अर्जुन उनके पास शिक्षा लेने गये तो भीष्म जी ने बड़ी अच्छी शिक्षायें दी। उस समय अर्जुन ने पूछा कि जब द्रौपदी का वस्त्र-हरण हो रहा था, तब आप चुप क्यों रहे? तब भीष्मपितामह जी ने कहा कि मैंने कौरवों का अन्न खाया था, वही खून मेरी नसों में दौड़ रहा था, अब आपके बाण

लगने से वह खून निकल गया और अशुद्ध अन्न का प्रभाव खत्म हो गया है।

इस आख्यान को देखते हुए यह विचार आता है कि आज समाज में जो भी गलत कार्य हमारी आँखों के सामने हो रहे हैं उसे देखते हुए भी हम चुप बैठे रहते हैं। कुछ करना चाहते हैं मगर कर नहीं पा रहे हैं। इसका कारण भी यह है कि हम ऐसे अनाज का सेवन कर रहे हैं जो हमारे अच्छे विचारों को कार्यान्वित होने नहीं दे पा रहा हैं, इसलिए और ही विकृतियाँ बढ़ रही हैं। इसके फलस्वरूप हम जो चाहते हैं कि हमारा जीवन सुखमय, आनन्दित हो तो उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए इस प्रकार की रुकावट आती है।

अगर हम रासायनिक खाद और कीटनाशक द्वारा होने वाले नुकसान और कर्मों की गुह्यगति से स्वयं को सुरक्षित रखना चाहते हैं, तो हमें जहाँ से हमारा मुख्य फाउण्डेशन बिगड़ गया है वहाँ से ही सुधार करना आवश्यक है। और वह मुख्य फाउण्डेशन है हमारे मन के विचार। अब हम नैसर्गिकता से दूर होकर, कृत्रिम जीवन अपना रहे हैं और कुदरती नियमों को तोड़ दिया है, अब फिर से हमें कुदरत के नियम प्रमाण चलकर विज्ञान के आधार से, निसर्ग तथा पाँच तत्वों सहित सर्व जीव-जंतुओं से, वनस्पतियों से, पशु-पंछी, प्राणियों से भी स्नेह और प्रेम का रिश्ता जोड़कर जीवन को सुखमय बनाना है। इसके लिए आवश्यकता है, आध्यात्मिक शक्तियों की जो हमें राजयोग के माध्यम से मिलती हैं। इस 'राजयोग' के माध्यम से मिलने वाली शक्तियों के आधार से हम जमीन की उर्वरक शक्ति बढ़ा सकते हैं, फसल को निरोगी और शक्तिशाली बना सकते हैं, कई प्रकार के कीट और रोग भी नियंत्रण कर सकते हैं और अनाज में सात्विकता भी ला सकते हैं। ऐसी खेती पद्धति का नाम रखा है ''शाश्वत यौगिक खेती''।

यह योग कोई अज्ञान, अन्धश्रद्धा की बात नहीं है परन्तु यह योग एक सम्पूर्ण विज्ञान है। इस योग में मन्त्र, प्राणायाम या आसनों की बात नहीं है। यह योग अति प्राचीन प्रणाली है। भारत के प्राचीन योग की ख्याति समस्त विश्व तक पहुँची हुई है। फिर भी आज पूरे विश्व में इस योग विद्या की कमी तथा आध्यात्मिक समझ न होने के कारण ही बेचैनी, परेशानी तथा तनाव का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। मानवता का भविष्य पूर्णतय: अन्धकार में नज़र आने लगा है।

ऐसे समय पर कलियुग के अन्तिम चरण में योगेश्वर, ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद द्वारा सत्य व सम्पूर्ण योग सिखाया है जिसे 'राजयोग' की संज्ञा दी गई है। इस आधुनिक युग में राजयोग की बहुत ही आवश्यकता है। यह योग ही एकमात्र साधन है जिससे

मानसिक तनाव दूर होता है तथा तन-मन को सुख-शान्ति और शक्ति प्राप्त होती है। यह राजयोग मनुष्य को कर्मकुशल बनाता है और कलियुग के इस दूषित वातावरण में सन्तुलित जीवन जीने की कला भी सिखाता है। इस राजयोग के अभ्यास से आत्मा के अन्दर की गुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं और आत्मा में अनेक गुणों, कलाओं, विशेषताओं का आविर्भाव होने लगता है। यह राजयोग मनुष्य को कुशल प्रशासन की कला भी सिखाता है और मन में बैठे विकारों के कीटाणुओं को भी नष्ट करने में सक्षम बनाता है। मन को शक्तिशाली बनाने के लिए, शुद्ध विचारों की उत्पत्ति के लिए, मन की एकाग्रता बढ़ाने के लिए 'राजयोग' एक औषधि है।

राजयोग जीवन को दिव्य बनाकर सम्पूर्णता की राह पर चलाने वाली साधना है। इस राजयोग में कोई शारीरिक आसन नहीं बताये जाते हैं, लेकिन हरेक बात आध्यात्मिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर व्यवहारिक रूप से समझाई जाती है। अगर जिज्ञासु इस राजयोग का एकाग्रता से अभ्यास करे और अन्तर्मुखी होकर बताये गये नियमों का जीवन में पालन करे तो उसे जीवन में परमानंद और सच्ची सुख-शान्ति की अनुभूति होगी। यह योग कोई भी व्यक्ति कर सकता है चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, रंग, उम्र, व्यवसाय, देश आदि का हो क्योंकि राजयोग इन सब बन्धनों से पार ले जाता है। ऐसी अनुभूति व्यक्ति खुद भी कर सकता है तो किसी और व्यक्ति, वस्तु या वनस्पति को भी करा सकता है। सिर्फ आवश्यकता है स्नेह और प्रेम से उस व्यक्ति, वस्तु या वनस्पति के साथ रिश्ता जोड़ने की।

वनस्पति जगत के कुछ वैज्ञानिक सिद्धांत

डॉ. सर जगदीश चंद्र बोस ने अपने प्रयोग द्वारा सिद्ध किया कि मनुष्यों की तरह ही वृक्ष वनस्पतियों की क्रियायें होती हैं। वनस्पतियाँ फेफड़े बिना श्वाँस ले सकती हैं, बिना पेट के अन्न को हजम कर सकती हैं, स्नायु बिना हलचल भी कर सकती हैं। तो किसी ज्ञान संस्था के बिना सन्देश ग्रहण करना और उसे प्रतिक्रिया देना, यह क्रिया भी वनस्पतियाँ करती हैं। उन्होंने वनस्पति के अन्दर की हलचल को जानने की एक मशीन तैयार की, जिसके आधार से सिद्ध किया कि मृत्यु के अन्तिम क्षण में जैसे प्राणी, पशु हबकते है वैसे ही वनस्पति भी अन्तिम क्षण के समय हबकते हैं। उसी समय उनके भीतर से बड़े पैमाने पर उर्जा बाहर फेंकी जाती है। उन्होंने ऑप्टिकल पल्स रेकॉर्डर मशीन द्वारा यह स्पष्ट किया कि जब वनस्पति को बाहर से कोई ऊर्जा (वायब्रेशन) स्पर्श करती है तो उस

ऊर्जा का वनस्पतियों में विद्युत शक्ति में परिवर्तन होता है और उसका प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देता है।

क्लीव बॅकस्टर जी ने जगदीशचंद्र बोस जी के इस संशोधन को आगे बढ़ाते हुए यह सिद्ध कर बताया कि वनस्पतियों में भावनायें भी होती है, उन्हों को मनुष्य के मन की भावनायें समझ में आती हैं। उन्होंने लाय डिटेक्टर नाम की मशीन द्वारा वनस्पतियों पर कुछ प्रयोग किये। मन के अन्दर की भावनाओं के कारण वनस्पति के अन्दर की ऊर्जा का प्रवाह कम ज्यादा होता है। उस प्रवाह को भावनाओं के द्वारा होने वाला प्रतिशोध लाय डिटेक्टर में गॅलव्हानो मीटर से नापा जाता है।

मनुष्य के मन की भावनाओं को वनस्पतियाँ कैसे प्रतिक्रियायें देती हैं यह देखने के लिए उन्होंने ड्रॅसिना नामक वनस्पति का पत्ता यंत्र को जोड़ दिया और मन में सोचा कि अभी यह पत्ता जलायें। तो आश्चर्य की बात है! पत्ता जलाने का विचार मन में आते ही माचिस हाथ में लेने के पहले ही तुरंत यंत्र पर आलेख दर्शाने वाली सुई जोर-जोर से प्रतिरोध दर्शाने लगी। उसी समय उन्होंने समझ लिया कि उसके मन के विचारों को वनस्पति ने समझ लिया है। दूसरी बार उन्होंने इच्छा के विरुद्ध पत्ता जलाने का नाटक किया तो उस समय पेड़ द्वारा की गई प्रतिक्रिया कम गति वाली थी तो इससे सिद्ध होता है कि पेड़ सच और झूठ के विचार भी समझ जाते हैं।

ऐसे आश्चर्यजनक निरीक्षण के पश्चात् उन्होंने लगभग 25 प्रकार की वनस्पतियों पर देश के अलग-अलग भागों में, अलग-अलग लोगों द्वारा लाय डिटेक्टर के जरिए प्रयोग करवाये और सभी जगह उन्हें पहले जैसा ही परिणाम दिखाई दिया। इससे सिद्ध होता है कि वनस्पतियाँ विचार करती हैं। उन्होंने आगे जाकर यह भी बताया कि कोई भी वृक्ष या वनस्पति और उसकी पालना करने वाले व्यक्ति में एक अटूट रिश्ता बनता है। ऐसे व्यक्ति चाहे उस वृक्ष या वनस्पति के नजदीक हों या कितने भी दूर हों तो भी वे सम विचारों वाले मित्रों की तरह अपने संकल्पों के आधार से अपने दिल की भावनाओं को वृक्ष, वनस्पति तक पहुँचाते हैं और वनस्पतियाँ भी उसी अनुरूप अपनी प्रतिक्रियायें देती रहती हैं।

मानस भौतिक शास्त्र के जनक 'फेहनर' ने अपने प्रयोग द्वारा सिद्ध किया है कि वनस्पतियों में भी व्यक्तित्व होता है। वनस्पतियों को स्वयं को लगने वाली अन्न की जरूरत कितनी है यह मालूम पड़ता है और अपनी जरूरत अनुसार उसे आपे ही वह प्राप्त करना आता है। सिर्फ उन्हों का जानना या प्राप्त करने का मार्ग अलग है।

अल्ब्रेट हर्झीली नाम के संशोधक ने 'दी ओरिजीन ऑफ इनॉर्गेनिक सबस्टेन्सेस' नामक किताब

लिखी। इस किताब में उन्होंने सिद्ध करके बताया कि वनस्पति केवल अन्न घटक ही तैयार नहीं करती है परन्तु यह एक जादूगरनी भी है। एक मूलद्रव्य का रूपांतरण दूसरे मूलद्रव्य में करने की शक्ति भी वनस्पतियों में है। आवश्यकता अनुसार वनस्पति स्फुरद का गंधक में, कैल्शियम का फॉस्फेट में, मैग्नेशियम का कैल्शियम में, कार्बोनिक एसिड का मैग्नेशियम में और नाइट्रोजन का पोटॉशियम में रूपांतर करते हैं। वनस्पति नई रचना नियमित तापमान में कम-से-कम ऊर्जा खर्च करके करती है, यह भी उन्होंने सिद्ध किया है।

'चार्ल्स डार्विन' नाम के इंग्लिश वैज्ञानिक ने स्पष्ट किया है कि वनस्पतियों में ऐसी अकल्पनीय शक्ति होती है, जिस द्वारा वनस्पतियों को समझ वा बुद्धि प्राप्त होती है। उन्होंने अपनी 'दी पॉवर ऑफ मूवमेन्ट्स इन प्लान्ट्स' किताब में लिखा है कि वनस्पतियों की जड़ों की मूल में जो जीवाणु होते हैं वे ब्रेन के समान कार्य करते हैं, ऐसा कहने में कोई हर्जा नहीं। ये पेशियाँ, वनस्पतियों के लिए सन्देश ग्रहण करने और हलचल को नियंत्रण करने का कार्य करती हैं।

भारतीय वैज्ञानिक डॉ. टी.सी.सिंह ने चेन्नई स्थित 'अन्नामलाई विद्यापीठ' में बांसुरी, वायोलिन, वीणावादन, पेटी इत्यादि वाद्यों द्वारा वनस्पतियों पर अनेक प्रयोग किये और सिद्ध किया कि पेड़ों की बढ़ोतरी तथा फल, फूल व बीज इत्यादि के विकास पर संगीत का अनुकूल परिणाम पड़ता है। ऐसे संगीत से पत्तों की संख्या 72 प्रतिशत बढ़ गई तो पेड़ का विकास 20 प्रतिशत ज्यादा दिखाई दिया। मद्रास और पाँडिचेरी स्थित सात जगहों पर उन्होंने संगीत का प्रयोग किया तो अनाज के उत्पादन में 25 से 60 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। उन्होंने फूलोंवाली बगिया में बिना घुँघरू, भरत नाट्यम का प्रयोग किया तो गेंदे तथा पिट्यूनिया के फूलों की बगिया में 15 दिन पहले ही फूल दिखाई देने लगे। इसमें नृत्य की लय द्वारा निर्माण होने वाले वायब्रेशन को फूलों के पेड़ों ने जमीन के अन्दर से ग्रहण किया होगा और उसका प्रभाव उनके विकास पर हुआ होगा, ऐसा अनुभव उन्होंने व्यक्त किया।

डॉ. हेमांगी जांभेकर ने अपने ''नैसर्गिक शक्तियों का नियोजन'' लेख में स्पष्ट किया है कि सौर ऊर्जा, चंद्र ऊर्जा और वैश्विक ऊर्जा के द्वारा जमीन को सजीव करना, कम्पोस्टिंग फास्ट होना, क्षारयुक्त जमीन को सुधारना सहज सम्भव है। इन ऊर्जाओं द्वारा जमीन के अन्दर के जीवाणु वनस्पतियों पर आने वाले कीट इत्यादि के जीवन चक्र में कोई भी बदलाव न करते हुए ऊर्जा नियोजन से फसलों को अति ऊर्जा सम्पन्न कार्यक्षम किया जाता है। इन ऊर्जाओं के इस्तेमाल से राइझोबियम के जीवाणु ठीक रीति से नत्र स्थिरीकरण का कार्य करते हैं। मिथेनोजेनिक जीवाणु और

कम्पोस्टिंग करनेवाले जीवाणु अधिक कार्यक्षम होकर अपना कार्य करते हैं। इनके द्वारा कम्पोस्टिंग फास्ट होना, गन्ने में शुगर का प्रमाण बढ़ना, कीट तथा रोग नियंत्रण कम-से-कम दवाइयों के छिड़काव से सम्भव होता है। इससे खेती उत्पादन और उत्पादन की गुणवत्ता में कमाल का सुधार होता है।

अमेरिका के जग प्रसिद्ध वैज्ञानिक जॉर्ज वाशिंगटन कार्व्हर के खेती सम्बन्धित विभिन्न प्रयोगों को देखकर कई लोगों ने उन्हें पूछा कि आपके जैसे प्रयोग या अनुभव और कोई कर सकता है क्या? तो उन्होंने अपना हाथ टेबल पर रखी हुई बाईबल पर रखकर जवाब दिया कि सब रहस्य इसमें छिपे हुए हैं, परमात्मा के आश्वासन में। केवल यह आश्वासन ही सत्य है, इसमें असीमित ताकत है। जिन्हों का परमात्मा के ऊपर विश्वास है वह सभी मेरे जैसे प्रयोग व अनुभूति कर सकते हैं लेकिन उसके लिए प्रकृति तथा वृक्ष-वनस्पतियों से प्रेम और स्नेह से रिश्ता जोड़ना बहुत जरूरी है।

वनस्पतियों का जादूगर 'ल्युथर बरबॅक' ने प्रयोग द्वारा केकतस (निवडूंग) की वनस्पति को अर्जी डाली कि वे अपने कांटें निकाल लेवे। बरबॅक के प्यार के खातिर निवडूंग ने भी उनका कहना मान लिया और अपने संरक्षण हेतु जो कॉंटे थे वे निकालने के लिए तैयार हुए। उनके पास पेड़ पौधों के साथ संवाद करने की शक्ति थी, प्रेम और स्नेह था। इसी कारण 18 अप्रैल 1906 के भूकम्प में जब सैनफ्रांसिस्को का विध्वंस हुआ तब बरबॅक का मकान भूकम्प के केन्द्र बिन्दु के पास ही था फिर भी उनके मकान के झरोखों का एक काँच भी नहीं टूटा। बरबॅक का कहना यही था कि नैसर्गिकता के साथ विलक्षण दोस्ती का सम्बन्ध जुटाने का यह परिणाम था।

इन सभी प्रयोगों को सुनते हुए मन में यह विश्वास होने लगता है कि हमें भी ऐसे ही निसर्ग के साथ दोस्ती करना बहुत आवश्यक है। विज्ञान के युग में हमारा जीवन कृत्रिम बनता जा रहा है, हमें फिर से निसर्ग के साथ रिश्ता जोड़कर चलना बहुत आवश्यक है। आज हर एक किसान खेती को व्यवसाय समझकर कर्म कर रहा है। खेती को अनाज उत्पादन करने का साधन समझ रहे हैं। इसी कारण जमीन तथा वनस्पति के साथ जो अपनापन, स्नेह, प्रेम चाहिए, उसका अनुभव हम नहीं कर पा रहे हैं। जमीन के साथ माँ के रिश्तों से पालना देंगे और लेंगे तो वह धरती माँ हमें बहुत कुछ देने के लिए तैयार है। अगर हमारा अपने ऊपर प्यार है, धरती माँ से प्यार है और परमात्मा के ऊपर विश्वास है तो हम इस शाश्वत यौगिक खेती के माध्यम से सच्चे-सच्चे अन्न दाता बन फिर से इस भारत भूमि को सुजलाम् सुफलाम् बनाकर भारत को कृषि प्रधान बना सकते हैं।

योग के प्रयोग की विधियाँ एवं उसके परिणाम

प्राचीन काल के तपस्वियों की तपस्या के बारे में हम सबने सुना है कि जब ऋषि-मुनि गुफाओ में बैठकर तपस्या करते थे, तो उनकी तपस्या का प्रभाव दूर दूर तक दृष्टिगोचर होता था। अगर कोई हिंसक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति तपस्वी के आश्रम में अचानक प्रवेश करता, तो उसके भीतर के हिंसात्मक विचार शान्त हो जाते थे। ऐसे ही कई जगह आश्रम में कदम रखते ही मनुष्य अपना दु:ख तथा गम भूल जाते थे। ऐसे भी सुना है वा चित्रों में देखा है कि कई जगह आश्रम में तपस्वी के आस-पास ही हिंसक प्राणी भी आकर शान्ति से बैठ जाते हैं। कहने का भाव यह है कि तपस्या अर्थात् योग के अन्दर एक अद्भुत शक्ति समायी हुई होती है, जिससे असम्भव भी सम्भव दिखाई देता है।

यहाँ पर परमात्मा ने अति सहज योग सिखाया है। इसमें मन्त्र, प्राणायाम वा आसनों की बात नहीं है। योग का सरल अर्थ है - **'याद'**। इसमें आँखें बन्द करने की आवश्यकता नहीं है। राजयोग हमें कर्मयोग की प्रेरणा देता है। इस राजयोग के अभ्यास के लिए स्वयं का और परमात्मा का ज्ञान होना अति आवश्यक है। मैं कौन हूँ? मुझे किसके साथ योग लगाना है? राजयोग की सही विधि है स्वयं को ज्योति बिन्दु रूप आत्मा निश्चय कर, दिव्य ज्योति बिन्दु रूप परमात्मा के साथ स्नेह और प्रेम से सर्व सम्बन्ध जोड़ना जिससे आत्मा अधिकारी बनकर परमात्मा से सर्व प्राप्तियों का अनुभव करे। आत्मा और परमात्मा के बीच सम्बन्ध जोड़ने के लिए आवश्यकता है श्रेष्ठ विचारों की। जिस प्रकार बैटरी का सम्बन्ध पॉवर हाऊस के साथ होने से बैटरी में फिर से शक्ति भर जाती है। ठीक उसी प्रकार सर्वशक्तिमान परमात्मा, जो सर्वगुणों व शक्तियों का स्रोत है, उससे समानता के आधार पर सम्बन्ध जोड़ने से आत्मा में कई गुणों और शक्तियों का संचार होता है।

राजयोग की प्रथम अवस्था है - आत्म स्थिति का अनुभव करना। चलते-फिरते, उठते-बैठते, कोई भी कर्म करते स्वयं को सत्य निज स्वरूप में अनुभव करना, यह अभ्यास बहुतकाल से पक्का और सहज रहे।

आत्मा की तीन मुख्य शक्तियाँ हैं - मन, बुद्धि और संस्कार।

विचार करने की शक्ति को **मन** कहते हैं।

निर्णय और विवेक शक्ति को **बुद्धि** कहते हैं।

कर्म का प्रभाव स्मृति पर पड़ता है उसे **संस्कार** कहते हैं।

जैसे हमारे विचार होते हैं उसी आधार पर हमारे चित्त का निर्माण होता है, उससे ही वृत्ति बनती है, उसी आधार से दृष्टिकोण बनता है। जैसा दृष्टिकोण वैसा व्यवहार (कर्म) होता है और व्यवहार

से ही हमारे अच्छे या बुरे संस्कार बन जाते हैं।

आत्मा मूलत: ज्ञानस्वरूप, पवित्र स्वरूप, शान्त स्वरूप, प्रेम स्वरूप, सुख स्वरूप, आनन्द स्वरूप, शक्ति स्वरूप और दिव्य गुणों से युक्त है और परमात्मा इन सभी गुणों व शक्तियों का स्रोत अथवा सागर है। जब हम स्वयं को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करने लगते हैं, तो परमात्मा के इन सब गुणों व शक्तियों का संचार आत्मा में होने लगता है और आत्मा स्वयं में भरपूरता का अनुभव करने लगती है। इस अवस्था में एकाग्र होने का अभ्यास बढ़ाते जाना है। पहले एक मिनट फिर दो, तीन करके, पाँच-दस मिनट तक एकाग्र होने से इन गुणों एवं शक्तियों के प्रकम्पन आत्मा से निकलकर शरीर के माध्यम से बाहर फैलने लगते हैं और प्रकृति सहित सभी को इसका अनुभव होने लगता है।

वर्तमान समय स्वयं को देह समझकर किये जाने वाले विचारों का बहुत बुरा प्रभाव, प्रकृति सहित जीव-जन्तु, पशु-पंछी, प्राणी, वृक्ष-वनस्पतियों पर हो रहा है। परन्तु राजयोग के अभ्यास से आत्मा के स्वरूप में रहकर विचार करने से प्रकृति सहित सर्व पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है क्योंकि आत्मिक स्थिति में विकार रहित विचार चलते हैं।

राजयोग में आत्मा परमात्म-शक्तियों की अनुभूति करती है, उस समय आत्मा के अन्दर से निकलने वाले प्रकंपन द्वारा वायुमण्डल बदल जाता है। ऐसी एकाग्र अवस्था में स्थित रहकर कितनी भी दूर वाले व्यक्ति, वस्तु या वनस्पति प्रति भी अगर हम श्रेष्ठ संकल्प करते हैं तब उस दूर वाले व्यक्ति, वस्तु या वनस्पति के हर जिन्स को या उनके अन्दर की ऊर्जा को हमारे श्रेष्ठ प्रकम्पन प्रभावित करते हैं या उसे क्रियाशील करते हैं। यही प्रयोग हमें जमीन और वनस्पतियों को निरोगी और शक्तिशाली बनाने के लिए करना है।

राजयोग का प्रयोग फसल पर करने के लिए सबसे पहले हमें प्रकृति के पाँच तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश तथा सभी ग्रह और तारे इन सभी को परमात्म शक्तियों के प्रकंपन देना आवश्यक है जिनके सहयोग से वनस्पति बढ़ती है, अनाज या फल का निर्माण होता है। उसके बाद जिस जमीन से फसल लेनी है उस जमीन को परमात्म शक्तियों के प्रकंपन देकर निरोगी और शक्तिशाली बनायें। फिर बीज को निरोगी और शक्तिशाली पौधों के निर्माण के योग्य बनाने के लिए परमात्म शक्तियों से बीज के अन्दर की ऊर्जा को प्रेरित करें। बीज बुवाई के बाद बीज के अंकुरित होने के समय, पौधों के बढ़ने के समय, फसल में अनाज भरने के समय से ले करके अनाज

निकलने तक प्रतिदिन योग के प्रयोग द्वारा परमात्म शक्तियों के प्रकंपन जमीन, बीज, पौधे और अनाज को देना आवश्यक है। कीट, रोग, पक्षी, प्राणियों से फसल का संरक्षण करने के लिए, परमात्म शक्तियों का सकाश (प्रकंपन) देकर पूरी खेती में फसल के चारों ओर कवच के रूप में शक्तिशाली आभामण्डल बनाएं।

यह प्रयोग प्रतिदिन एक ही समय, एक ही जगह बैठकर एक ही विधि से करना है। इसके लिए चाहे खेती में बैठो या कहाँ भी - खेती से कितना भी दूर, घर में बैठकर भी कर सकते हैं। सिर्फ नियम और विधि में बदलाव न हो। पहले पांच तत्वों को और ग्रह तारों को, फिर प्रयोग वाली जमीन और फसल को - इस प्रकार योग द्वारा परमात्म शक्तियों की अनुभूति करायें।

दिन भर में जो भी समय मिले तब पाँच मिनट के लिए खेती में या कहाँ भी बैठकर एकाग्रता से योग की अनुभूति करें और जमीन तथा फसल को भी करायें। ऐसी योगयुक्त अवस्था से, स्नेह और प्रेम से फसल को दृष्टि से निहाल करें, अपनी शुभ भावनाओं की लेन देन करें, अपनेपन की बातें करें। जमीन से माँ का रिश्ता जोड़कर बातें करें और फसल के साथ बच्चों की तरह वार्तालाप करें, प्यार से पालना करें।

खेती में कोई भी कर्म करते समय, चाहे जमीन में खाद मिलाते समय या फसल को पानी देते समय, घासफूस निकालते समय, टॉनिक या कीटरोधक छिड़कते समय अपने आत्मिक स्वरूप में रहकर परमात्मा पिता की याद में कर्म करने से खाद, टॉनिक और कीटरोधक की कार्यक्षमता बढ़ेगी और बहुत ही सुन्दर और चमत्कारिक परिणाम दिखाई देंगे।

योग के प्रयोग में अपने सूक्ष्म शरीर (फरिश्ता स्वरूप) द्वारा, अपनी प्रयोग वाली खेती को सूक्ष्मवतन में बापदादा के सम्मुख ले जाकर बापदादा द्वारा सकाश अर्थात् वायब्रेशन देकर जमीन और फसल को और शक्तिशाली बनाएँ। सूक्ष्मवतन - जहाँ आत्मा का सम्पूर्ण स्वरूप, इस साकार जगत (पाँच तत्वों के मांडवे) से पार सूक्ष्म जगत् में निवास करता है जिसे लाइट का वतन, अव्यक्त वतन वा सूक्ष्म वतन कहा जाता है।

कभी अपने शक्तिशाली शुभ संकल्पों के माध्यम से अपनी प्रयोग वाली खेती की फसलों को परमधाम की गहन शक्तियों के प्रकंपन से निरोगी और शक्तिशाली बनाएं। (परमधाम - जो आत्मा और परमात्मा का मूल रहने का स्थान है, जो इन पाँच तत्वों से पार लाल सुनहरा प्रकाश ही प्रकाश तत्व है, जिसे ब्रह्माण्ड भी कहते हैं)

ऐसे ही कभी बापदादा का नीचे आह्वान करके जमीन और फसल को बापदादा अपनी दृष्टि से निहार रहे हैं, अपनी शक्तियों से निरोगी और शक्तिशाली बना रहे हैं। ऐसा अभ्यास और अनुभव करें। (बापदादा- - ब्रह्मा बाप के माध्यम में शिवबाबा जब प्रवेश करते है तब ब्रह्मा को बाप और शिवबाबा को दादा अर्थात् ग्रेंडफादर कहते है।)

कभी ऐसा भी अभ्यास करें कि आपकी प्रयोगवाली खेती विश्व ग्लोब के ऊपर है और परमधाम (शान्तिधाम) नीचे आ गया है। परमधाम की गहन शान्ति की शक्ति की अनुभूति जमीन और फसल को हो रही है...। एकदम पवित्र, शान्त और शक्तिशाली वातावरण में फसल बढ़ रही है...।

घर में बैठे भी अपने सूक्ष्म फरिश्ते स्वरूप द्वारा खेती में पहुँचकर स्नेह और प्रेम से, श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्पों से सकाश देना है। किन्हीं और विशेष आत्माओं का भी आह्वान करके जमीन और फसल को सकाश दे सकते हैं।

कोई भी फफूंदी, रोग या कीट का असर फसल पर दिखाई दे तो तुरंत पवित्र स्वरूप में स्थित होकर, पवित्रता के सागर परमात्मा की पवित्र किरणें फसल को दें, फिर शक्तियों की किरणें दें।

समय अनुसार खेती में पन्द्रह दिन में या मास में एक बार संगठित रूप से योग करने से वायुमण्डल को शुद्ध और शक्तिशाली बनाने में मदद मिलती है।

ऐसे ही आत्मा के मूल गुणों पर आधारित राजयोग का अभ्यास करना है। अपने (आत्मा के) सात गुणों के वायब्रेशन का जमीन और फसल को कैसे लाभ होता है, यह देखते हैं।

1) ज्ञान स्वरूप :- जब हम आत्मा ज्ञान स्वरूप होकर ज्ञान सूर्य परमात्मा की याद में एकाग्र होकर फसल को शुभ भावनाओं के साथ अर्जी डालते हैं तो उसी अनुसार फसल द्वारा प्रतिक्रियायें मिलती हैं। आत्मा द्वारा निकलने वाले वायब्रेशन जब फसल तक पहुँचते हैं तो वनस्पति के अन्दर की सर्व क्रियायें प्रेरणात्मक रूप से होने लगती हैं। जमीन से अन्न घटक जड़ों द्वारा पत्तों तक जाना, अन्न का तैयार होना और तैयार हुआ अन्न अपनी जगह तक पहुँचना इस कार्य में कोई भी रुकावट नहीं आती है। वनस्पति में अन्न की वृद्धि के कार्य में भी इस अभ्यास से ज्यादा लाभ होता है।

एक प्रयोग - एक बर्तन में पानी ले करके उसमें अपनी अंगुली रखें और अभ्यास करे कि मैं आत्मा ज्ञान स्वरूप हूँ... ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ आत्मा द्वारा अंगुली के माध्यम से जल में उतर रही है...। दस मिनट तक इसी एक संकल्प में एकाग्र हो जायें। यह पानी जमीन अथवा फसल पर

छिड़कने से हमारे श्रेष्ठ संकल्पों का प्रतिसाद बहुत अच्छा दिखाई देगा। (ध्यान रहे -जब पानी में अंगुलियाँ हों तब जरा भी संशय या व्यर्थ विचार न चलें)

(2) पवित्र स्वरूप :- जब हम आत्मा पवित्र स्वरूप में स्थित होकर पवित्रता के सागर परमात्मा की याद में एकाग्र होती हैं तो हमारे द्वारा निकलने वाले पवित्र प्रकंपन से वातावरण शुद्ध बनता है। जमीन या फसल में प्रदूषण द्वारा जो भी अपवित्र रोग या कीट (फफूंद रोग, वायरस) हैं, वह नष्ट होते हैं और जमीन तथा फसल के निरोगी बनने में मदद मिलती है। योग द्वारा मिलने वाले पवित्र प्रकंपन से जमीन और फसल की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

हम पवित्र स्वरूप में स्थित होकर पानी में अंगुलियाँ रखकर पवित्रता के सागर परमात्मा की याद में दस मिनट तक एकाग्रता से अनुभव करें कि पवित्र किरणें मुझ आत्मा से निकलकर अंगुलियों से पानी में उतर रही हैं। यह पानी जमीन या फसल पर छिड़कने से रोग या कीट नियंत्रण में ज्यादा लाभ मिलता है।

(3) शान्त स्वरूप :- जब आत्मा शान्त स्वरूप में स्थित होकर शान्ति के सागर परमात्मा की याद में एकाग्र होती है, तब आत्मा द्वारा निकलने वाले शान्ति के प्रकंपन जमीन और फसल को पहुँचाने से प्रदूषण द्वारा जमीन और वनस्पतियों में जो तनाव आता है, वह शान्ति के प्रकंपन से दूर होता है। पौधों की श्वसन क्रिया सुचारु रूप से होने लगती है। प्रकाश संश्लेषण का कार्य भी अच्छा चलता है। हरित द्रव्य का प्रमाण बढ़ता है और वनस्पति के अन्दर की क्रियायें (ऊर्जा का कार्य) सामान्य रूप से होती है।

एक बर्तन में पानी लेके उस पानी में अंगुलियाँ रखें। स्वयं को शान्त स्वरूप में अनुभव करके शान्ति सागर परमात्मा की याद में दस मिनट के लिए एकाग्र हो जाएँ। गहन शान्ति की अनुभूति करें। यह पानी जमीन या फसल पर छिड़कने से शान्त स्वरूप से होने वाले प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देंगे।

(4) प्रेम स्वरूप :- जब आत्मा प्रेम स्वरूप में स्थित होकर प्रेम के सागर परमात्मा की याद में लवलीन होकर, जमीन तथा फसलों को भी प्रेम की अनुभूति के प्रकंपन पहुँचाती है तो शुद्ध और श्रेष्ठ भावनाओं का प्रतिसाद सहज और जल्दी मिलता है। वनस्पतियों में जो भी क्रियायें होती हैं, मूलद्रव्य (अन्न) का शोषण करना, फूल फल की वृद्धि करना, प्रकाश संश्लेषण तथा श्वसन क्रिया इत्यादि में प्रेम के प्रकंपन से बहुत मदद मिलती है। जमीन में वनस्पतियों के बढ़ने के लिए आवश्यक जीवनसत्व का निर्माण करने की शक्ति बढ़ती है।

पानी में अंगुलियाँ रखकर प्रेम स्वरूप में स्थित होकर प्रेम के सागर परमात्मा की याद में लवलीन होकर अभ्यास करें कि प्रेम की किरणें मुझ आत्मा से निकलकर अंगुलियों द्वारा पानी में उतर रही हैं। यह पानी जमीन और फसल पर छिड़कने से प्रेम स्वरूप से होने वाले प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देंगे।

(5) सुख स्वरूप :- जब आत्मा सुख स्वरूप में स्थित होकर सुख के सागर परमात्मा की याद में एकाग्र होती है तो आत्मा के अन्दर से निकलने वाले सुख के वायब्रेशन जमीन और फसल तक पहुँचने से जीवाणुओं की मात्रा बढ़ती है, ज्यादा समय तक कार्य शक्ति बढ़ती है और वनस्पतियों में थुर (तना) तथा डालियों की वृद्धि होती है, अनाज या फसल का आकार भी बढ़ता है और पौष्टिकता भी बढ़ती है।

एक बर्तन में पानी लेकर उसमें अंगुलियाँ रखें और सुख स्वरूप में स्थित होकर सुख के सागर की याद में दस मिनट एकाग्र होकर अनुभव करें कि मुझ आत्मा से निकलने वाले सुखों की किरणें अंगुलियों द्वारा पानी में उतर रही हैं। इस पानी को जमीन या फसल पर छिड़कने से सुख स्वरूप से होने वाले प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देंगे।

(6) आनन्द स्वरूप :- जब हम आत्म-अभिमानी बन आनन्द स्वरूप में स्थित होकर आनन्द के सागर परमात्मा की याद में एकाग्र होते हैं तो आत्मा के अन्दर से निकलने वाले आनन्द के प्रकंपनों को जमीन और फसल तक पहुँचाने से जमीन के अन्दर जीवाणुओं की कार्यक्षमता बढ़ती है। वनस्पति में फूल और फल की धारणा बहुत अच्छी होती है। फसल तेजी से बढ़ती है, फल या अनाज में चमक आती है, पुनरुत्पादन के लिए शक्ति मिलती है।

पानी में अंगुलियाँ रखकर आनन्द स्वरूप में स्थित होकर, आनन्द के सागर परमात्मा की याद में दस मिनट तक एकाग्र हो जाएँ, अभ्यास करें कि मुझ आत्मा द्वारा निकलने वाले आनंद के प्रकंपन अंगुलियों द्वारा पानी में उतर रहे हैं। यह पानी जमीन और फसल पर छिड़कने से आनंद स्वरूप से होनेवाले प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देंगे।

(7) शक्ति स्वरूप :- जब हम शक्ति स्वरूप होकर सर्वशक्तिमान परमात्मा की याद में एकाग्र होते हैं, तो आत्मा द्वारा निकलने वाले शक्तियों के प्रकम्पन जमीन और वनस्पतियों तक पहुँचाने से जमीन शक्तिशाली बनती है, जमीन में फसल योग्य जीवाणुओं की मात्रा बढ़ती है। वनस्पति सुदृढ़ एवं शक्तिशाली होकर बढ़ती है, किसी भी रोग या कीट का वनस्पति सहज प्रतिकार करती है, उससे

वनस्पति को कोई नुकसान नहीं होता। उत्पादन बढ़ाने में हमारे शक्तिशाली प्रकंपन बहुत ही मदद करते हैं।

एक बर्तन में पानी रखकर उसमें अंगुलियाँ डालकर शक्ति-स्वरूप बनकर सर्वशक्तिमान परमात्मा की याद में एकाग्र होकर अभ्यास करें कि मुझ आत्मा द्वारा निकलने वाली शक्तियों के प्रकंपन अंगुलियों द्वारा पानी में उतर रहे हैं। यह पानी जमीन और फसल पर छिड़कने से शक्ति स्वरूप से होने वाले प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देंगे।

(8) दिव्य गुण :- ऐसे ही गुण मूर्त बन, दिव्य गुणों के भण्डार परमात्मा की याद में एकाग्र होकर जमीन और फसल को प्रकंपन देने से अनाज में सात्विकता आती है, जिस अनाज को खाने से मानव के मन पर बहुत अच्छा प्रभाव होगा। कहावत भी है - ''जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसा तन।''

योग द्वारा बीज संस्कार

एक बर्तन में बीज लेकर, बर्तन सामने रखें और आत्म-स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की याद में एकाग्र हो जायें। इसी अवस्था में रहकर अभ्यास करें कि परमात्मा से निकलने वाली लाल सुनहरी किरणें मुझ आत्मा की दृष्टि द्वारा बीज में उतर रही हैं और एक-एक बीज पिता परमात्मा के समान चमक रहा है। संकल्प करो कि इस बीज से निकलने वाले पौधे निरोगी और शक्तिशाली होकर बढ़ रहे हैं।

कभी बीज को सूक्ष्म वतन में बापदादा के पास ले जाकर बापदादा द्वारा बीज को सकाश दें। अनुभव करें कि बीज अन्दर से लाल सुनहरे प्रकाशमय बन चमक रहे हैं और बाहर से पवित्रता की सफेद किरणों से (एक-एक बीज) बीज को लपेट लें।

ऐसे ही संकल्पों के आधार से बीज को परमधाम में परमात्मा पिता के नजदीक ले जायें। एकाग्र होकर अनुभव करें कि परमधाम के शान्त, पवित्र और शक्तिशाली वातावरण में एक-एक बीज के अन्दर परमात्मा की लाइट-माइट की किरणें उतर रही हैं और बीज चमक रहे हैं। परमात्म-शक्तियों के आधार से बीज से निकलने वाले पौधे निरोगी और शक्तिशाली होकर बढ़ेंगे, अनाज में पौष्टिकता और उत्पादन भी बढ़ेगा।

इस राजयोग के अभ्यास के लिए प्रात: ब्रह्ममुहूर्त 4 से 5 बजे का समय श्रेष्ठ है। इस समय चारों ओर का वातावरण अति शान्त होता है और मन ताजा होता है इसलिए मन की एकाग्रता बढ़ती है।

अपने घर के कोई भी स्वच्छ और शान्त स्थान को योग अभ्यास के लिए निश्चित कर लें तो सफलता सहज मिलेगी।

नियमित रूप से सभी नियमों का पालन कर राजयोग का अभ्यास करने वाले सभी भाई बहनें परमात्मा पिता द्वारा मिले स्वमान में रहकर योगाभ्यास करें तो परिणाम बहुत सुन्दर दिखाई देंगे।

योग के प्रयोग के लिए सिर्फ आवश्यकता है परमात्मा के ऊपर विश्वास और जमीन तथा फसल के साथ स्नेह और प्रेम से रिश्ता जोड़ना। एक बार अगर जमीन और फसल से स्नेह और प्रेम से रिश्ता जोड़ दिया तो भले हम उस फसल से कितने भी दूर क्यों न हों लेकिन अपने संकल्पों के आधार से हम नजदीक का अनुभव कर सकते हैं। हमारी भावनाओं से वनस्पति प्रभावित होती है और उसके अनुरूप फल देती है। इन भावनाओं को कोई विद्युत, चुम्बकीय शक्ति भी नहीं रोक सकती है।

इसमें पूरी सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ता और निश्चय के साथ परमात्मा द्वारा मिले नियम प्रमाण चलना आवश्यक है।

राजयोग कॉमेन्ट्री

(1) पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करें..... अपने स्वरूप की अनुभूति करें..... मैं आत्मा प्वाइन्ट ऑफ लाइट हूँ..... प्रकाशमय हूँ..... ज्ञान स्वरूप हूँ..... पवित्र स्वरूप हूँ..... शान्त स्वरूप हूँ..... प्रेम स्वरूप हूँ..... सुख स्वरूप हूँ..... आनन्द स्वरूप हूँ..... शक्ति स्वरूप हूँ..... अब परमधाम में परमपिता परमात्मा को याद करें..... वह भी प्रकाशमय हैं..... प्वाइन्ट ऑफ लाइट हैं..... तेजोमय हैं..... ज्ञान सूर्य हैं..... मुझ में ज्ञान सूर्य की किरणें समा रही हैं..... परमात्मा पवित्रता का सागर है..... मैं आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बनती जा रही हूँ..... प्रेम के सागर परमात्मा से प्रेम की किरणें मुझ पर उतर रही हैं और मैं आत्मा प्रेम से भरपूर हो रही हूँ..... मैं आत्मा सुख स्वरूप हूँ..... सुख के सागर से सुख की किरणें मुझ आत्मा में उतर रही हैं और मुझे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करा रही हैं..... परमात्मा आनंद का सागर हैं..... आनंद की किरणें मुझ में उतर रही हैं..... मैं आत्मा आनंदित हो रही हूँ..... सर्वशक्तिमान परमात्मा से निकलने वाली सर्व शक्तियों की किरणें मुझ आत्मा में उतर रही हैं..... मैं आत्मा सर्व शक्तियों से भरपूर हो रही हूँ..... परमात्मा दिव्य गुणों का भण्डार है..... मुझ आत्मा को दिव्य गुणों से भरपूर कर रहे हैं..... मैं आत्मा परमात्मा के समान सर्व

गुणों एवं शक्तियों से सम्पन्न व सम्पूर्ण बन रही हूँ.....।

इस प्रकार उपरोक्त दिये गये एक-एक संकल्प के स्वरूप में एकाग्र होकर, योगयुक्त होकर संकल्पों के माध्यम से जमीन और फसल को प्रकंपन देने से बहुत ही सुन्दर परिणाम देखने को मिलेंगे।

(2) सबसे पहले स्वयं को कोई-न-कोई स्वमानधारी अनुभव करें..... उस स्वरूप का अनुभव करें..... धीरे-धीरे अपना फरिश्ता रूप इमर्ज करें..... मैं फरिश्ता हल्का एवं प्रकाशमय..... सूक्ष्मवतन की ओर सैर कर रहा हूँ..... अपने को सूक्ष्मवतन में बापदादा के सम्मुख अनुभव करें..... अपनी कमी-कमजोरियों को निकालकर स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण अनुभव करें..... धीरे-धीरे अपने फरिश्ते शरीर को मर्ज करें..... मैं आत्मा प्वाइन्ट ऑफ लाइट..... परमधाम की ओर जा रही हूँ..... परमधाम में परमात्मा के साथ एकदम नजदीक और समानता का अनुभव करें..... एकाग्र होकर इस बीजरूप अवस्था में (5 मिनट तक) टिकने का अभ्यास करें कि पिता परमात्मा द्वारा निकलने वाली ज्ञान..... पवित्रता..... शान्ति..... प्रेम..... सुख..... आनंद..... शक्ति..... की किरणें मुझ आत्मा में उतरकर मेरे द्वारा पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चांद, तारे, ग्रह सभी तक पहुँच रही हैं..... सब पावन (शुद्ध), शान्त और शक्तिशाली बन रहे हैं..... जीव जंतु, कीट, पशु-पंछी, प्राणी सर्व को परमात्म शक्तियों की अनुभूति हो रही है..... शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्तियों से भरपूर हो रहे हैं..... सर्वत्र शान्ति ही शान्ति..... एकाग्र होकर इसी संकल्प में (पाँच मिनट तक) स्थित रहें।

इसी सम्पूर्ण अवस्था के साथ लाइट माइट आत्मा सूक्ष्मवतन में आकर फरिश्ता रूप धारण करती हूँ..... बापदादा के सम्मुख जाके बापदादा को आग्रह कर नीचे ले आयें... अपनी प्रयोगवाली खेती बापदादा को दिखायें..... रूहरिहान करें और अनुभव करें कि अब बापदादा जमीन और फसल को अपनी शक्तिशाली दृष्टि से निहार रहे हैं..... सकाश दे रहे हैं..... बापदादा के नयनों द्वारा पवित्रता और शक्तियों की किरणें जमीन और फसल को मिल रही हैं.... जिससे जमीन और फसल निरोगी और शक्तिशाली बन रही है..... जमीन में फसल को बढ़ाने के लिए आवश्यक अन्न द्रव्य तैयार हो रहे हैं..... फसल बढ़ रही है.....। ऐसे-ऐसे शुभ, शुद्ध सोच-विचार के ही संकल्प मन में चलाते रहें।

फसल में अनाज भरते समय परमात्मा द्वारा पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्तियों

की किरणें फसल को दें..... परमात्म-शक्तियों से अनाज में सात्विकता और पौष्टिकता बढ़ रही है..... अनाज की साइज भी बढ़ रही है..... ऐसे ऐसे श्रेष्ठ और शुभ संकल्प करें.....।

परमात्मा की पवित्र और शक्तिशाली किरणें फसल में उतर रही हैं..... कोई भी कीट, रोग या प्राणी से फसल को नुकसान न हो..... फसल के चारों ओर आभामण्डल बनाएँ..... पवित्रता.... शक्ति का.....।

खेती में कर्म करते समय सम्पूर्ण फरिश्ते रूप में कर्म करें.....। परमात्मा की शक्तियाँ मुझ फरिश्ते द्वारा जमीन और फसल को मिल रही हैं..... गहन शान्ति की किरणें पूरी खेती में फैल रही हैं..... अनुभव करें.....।

कभी खेती को सूक्ष्मवतन में बापदादा के पास ले जाएँ..... बापदादा सकाश दे रहे हैं..... ज्ञान..... पवित्रता..... शान्ति.....प्रेम..... सुख..... आनंद..... शक्ति..... गुण..... भरपूरता का अनुभव करें.....।

और कभी फसल को परमधाम की गहन शान्ति की अनुभूति कराएं..... हजारों सूर्यों से तेजोमय..... प्वाइन्ट ऑफ लाइट..... परमात्मा से निकलने वाली किरणें एक-एक पौधे में उतर रही हैं..... सर्वत्र शान्ति ही शान्ति..... जमीन और फसल को अनुभूति कराएँ.....।

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए खाद बनाते समय, खाद को योगयुक्त होकर परमात्म शक्तियों से भरपूर करें..... संकल्प करें कि यह खाद फसल को निरोगी और सुदृढ़ बनाने में मदद करेगी..... खाद के ऊपर वरदानी हाथ रखकर अनुभूति करें कि मुझ आत्मा से इन हाथों द्वारा परमात्मा की शक्तियों के प्रकंपन खाद में उतर रहे हैं..... खाद की ताकत बढ़ रही है..... कोई भी टॉनिक बनाते समय यही अभ्यास करें..... छिड़कते समय भी योगयुक्त होकर परमात्म शक्तियों के साथ छिड़कायें.....।

रोग या कीट प्रतिबंधक दवाई बनाते समय पवित्रता के प्रकंपन से भरपूर करें.....। बीज को बापदादा के सम्मुख ले जाएँ.....।

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

प्रकृति प्रदत्त पेड़ पौधों में पोषण की व्यवस्था जहाँ है, वहाँ पर ही की है। जमीन में जो है उसी में से जो चाहिए वह निर्माण करने की क्षमता पेड़ पौधों में नैसर्गिक ही है। आज वृक्षों की कटाई और रासायनिक खाद, तृणनाशक तथा कीटनाशक के इस्तेमाल से वनस्पतियों की पोषण व्यवस्था गड़बड़ा गई है, जमीन शक्तिहीन बनी है। ऐसी जमीन को फिर से शक्तिशाली बनाने के लिए पेड़ पौधों का लगाना और जमीन में सेंद्रिय-जैविक खाद इस्तेमाल करना आवश्यक है। वर्तमान समय प्रकृति के साथ मिलजुलकर चलना बहुत आवश्यक है। इसके लिए आध्यात्मिकता का आधार लेना बहुत जरूरी है।

सेंद्रिय और जैविक खाद बनाने के तरीके :-

(1) सबसे पहले ध्यान रहे कि कोई भी फसल से अनाज निकालने के बाद जो अनावश्यक भाग (वेस्ट पार्ट) रहता है उसे जमीन के ऊपर फसल में आच्छादित करें या जमीन के अंदर मिला दें।

जैसे फसलों की जड़ें, तना, घासफूस या धान का भूसा, गेहूँ का भूसा, मूंगफली के टरफल, गन्ने के पत्ते इत्यादि जमीन के ऊपर आच्छादित करें या हल चलाकर जमीन में मिला दें। इससे जमीन में सेंद्रिय पदार्थों का प्रमाण बढ़ता है।

(2) जमीन में प्रति एकड़ कम से कम छः टन गोबर की खाद डालना जरूरी है। इससे जमीन में जीवाणु स्थिर होते है।

(3) अगर गोबर की खाद उपलब्ध नहीं हो तो हरी खाद जमीन को देना आवश्यक है। इसमें -

ताग (सन)	- 5 किलो	ज्वार	- 1 किलो
ढैंचा	- 5 किलो	धनिया	- 1 किलो
मूंग	- 1 किलो	चौलाई	- 2 किलो
उड़द	- 1 किलो	पटसन	- 1 किलो
चना	- 1 किलो	राजगिरा	- 200 ग्राम
मेथी	- 1 किलो		

★ यह सब बीज मिक्स करके एक एकड़ खेती में बुवाई करें। 45 से 50 दिन में इस फसल को काटकर जमीन के अन्दर मिला दें।

★ गन्ने और केले की फसल में हरियाली की फसल काटकर ऊपर से आच्छादित भी कर सकते हैं।

(4) जीवामृत :- देशी गाय का गोबर 10 किलो, गोमूत्र 5 ली., 2 किलो केमिकल रहित गुड़, 250 ग्राम देशी गाय का घी, (उपलब्ध न हो तो मूंगफली या सोयाबीन का तेल 250 ग्राम), 2 ली. देशी गाय का दही, 2 किलो चना या चौलाई , या मूंग या उड़द का आटा, बरगद के पेड़ के नीचे की मिट्टी एक किलो, (या जिस फसल को जीवामृत देना है उस फसल के जड़ों के पास वाली मिट्टी एक किलो), 200 ली. पानी मिलाकर एक सीमेंट या प्लास्टिक टंकी में आठ दिन तक मोटे कपड़े से टंकी का मुख बांधकर रखिए। रोज दो बार मिश्रण को डंडे से घडी की दिशा में हिलायें, इससे जीवाणु की मात्रा बढ़ने में ऑक्सीजन की उपलब्धि होती है ।

★ यह मिश्रण एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़काएं या फसल को पानी देते समय पानी में मिलाकर छोड़ दें। तो इससे सभी सूक्ष्म जीवाणु बढ़ेंगे।

★ हर फसल को कम से कम मास में एक बार जीवामृत देना आवश्यक है।

(5) एक एकड़ जमीन में एक टन केंचुवे की खाद का जमीन गीली हो तब प्रति तीन मास के अंतरों से एक बार प्रयोग करें । इससे जमीन बहुत शक्तिशाली बनती है।

(6) अनाज की खाद :-

मकाई	- 10 किलो	उड़द	- 2 किलो
सोयाबीन	- 10 किलो	मूंग	- 2 किलो
ज्वारी	- 10 किलो	चौलाई	- 2 किलो
गेहूँ	- 10 किलो	चना	- 2 किलो
चावल	- 10 किलो	नाचणी	- 2 किलो

यह सब मिलाकर थोड़ी बड़ी साइज में पीस लें। एक एकड़ खेती में छोड़ने से पहले फसल में जमीन पर फेंक दें और पानी पिलाएँ। दूसरे दिन शाम के समय 200 ली. जीवामृत में, फसल की आवश्यकतानुसार नत्र, स्फूरद , पोटाश के जीवाणु संवर्धक मिलाकर जमीन गीली हो तब छिड़कायें। या पानी के साथ ही छोड़ देना बहुत आवश्यक है। इससे जमीन में जीवाणुओं की मात्रा बहुत बढ़ती है। जमीन शक्तिशाली बनती हैं।

★ फसल की आवश्यकतानुसार एक, दो या तीन बार भी किसी भी फसल के लिए इस्तेमाल कर सकते है।

(7) फसल पर छिड़काने के लिए टॉनिक :–

देशी गाय का दूध 3 लीटर, गोमूत्र 3 लीटर, नारियल का पानी 3 लीटर, केमिकल रहित गुड़ एक किलो, 200 ली. पानी में मिलाकर कोई भी फसल के ऊपर आवश्यकता अनुसार स्प्रे करें।

(8) बीजामृत :- देशी गाय का गोबर एक किलो, गोमूत्र एक ली., देशी गाय का दूध 200 मिली , बिना बुझा हुआ चूना 50 ग्राम, हींग 10 ग्राम, 10 ली.पानी में दो रात भिगो दें। प्रतिदिन मिश्रण को दो बार डंडे से घड़ी की दिशा में हिलाएं और मोटे कपड़े से मुख बांधकर रखें। दो दिन बाद इस बीजामृत को बीज संस्कार के लिए इस्तेमाल करें।

(9) जैविक खाद (जीवाणु संवर्धक) :- (जैविक खाद बाजार में बनी-बनाई मिलती हैं।)

(A) रायझोबियम जीवाणु संवर्धक :- चौलाई, मूंगफली, मूंग, अरहर, उड़द, वाल, मोठ, ग्वार, सन, ढैंचा, चना, मटर, सोयाबीन, लहसुन-घास इत्यादि के लिए इस्तेमाल करें। इससे –

★ फसलो में 15 से 20 प्रतिशत बढ़ोतरी दिखाई देगी ।

★ बीज की अंकुरण क्षमता बढ़ती है।

★ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है ।

★ जमीन में नायट्रोजन (नत्र) की मात्रा बढ़ती है।

★ जमीन में कर्ब: नत्र का प्रमाण योग्य रहता है और जमीन शक्तिशाली बनती है।

(B) ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु संवर्धक :- ज्वारी, गेहूं, धान, कपास, पत्तागोभी, फूलगोभी, सूर्य फूल, गन्ना, बाजरा, नाचणी, मकई और सब्जियों में गाजर, पालक, राजगिरा, करेला, मिर्च, बैंगन, टमाटर इत्यादि के लिए इस्तेमाल करें। इससे –

★ फसल की उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

★ बीज की अंकुरण क्षमता बढ़ती है।

★ फसल की जड़ों की वृद्धि होती है ।

★ फसल के उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ती है।

★ फफूंदी (बुरशी) के वृद्धि को प्रतिबंध करने में मदद करते हैं।

★ सब्जी जैसी फसलों में प्रथिनों की बढ़त मटर में स्टार्च, कंद में, गन्ने में शक्कर की बढ़त होती है।

(C) ॲझोस्पिरीलम जीवाणु संवर्धक :- मकाई, ज्वारी, बाजरा, गेहूँ, गन्ना और घास जैसी फसल के लिए उपयुक्त हैं। यह जीवाणु ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु से 2 प्रतिशत ज्यादा हवा में से नाइट्रोजन फसल को प्राप्त करा देते हैं। इसलिए 15 से 16 प्रतिशत अधिक उत्पादन मिलता है। इसके इस्तेमाल से प्रति एकड़ 8 किलो नायट्रोजन स्थिर होता है।

(D) स्फुरद (पी.एस.बी.) जीवाणु संवर्धक :- यह सभी प्रकार की फसल के लिए बहुत आवश्यक है। इससे सायट्रिक, लैक्टिक, सॅक्सीनिक, मॅलिक व फ्युमॅरिक जैसे सेंद्रिय द्रव प्राप्त होते हैं। यह द्रव अविद्राव्य स्वरूप में स्थित रहने वाले स्फुरद को विद्राव्य स्वरूप में रूपांतरित करते है। इससे जमीन का सामू (पी.एच.) कम होकर कैल्शियम, मैग्नेशियम, लोह, एल्युमिनियम, आदि मूलद्रव्यों का स्थिरीकरण होता है। जिसका स्फुरद के साथ संयोग नहीं होता और स्फुरद आर्थोफॉस्फेट स्वरूप में रहने से फसल को प्राप्त होता है।

(10) बीज संस्कार करने की विधि :-

(A) एकदल बीज के लिए बीज संस्कार करने की विधि :- मकई , ज्वारी, गेहूँ, धान, कपास, पत्तागोभी, फूलगोभी, सूर्य फूल, गन्ना, बाजरा और सब्जियों में गाजर, पालक, राजगिरा, करेला, मिर्च, बैंगन और टमाटर इत्यादि के 15 से 20 किलो बीज को जीवामृत छिड़ककर गीला बनाएं और 250 ग्राम ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु संवर्धक और 250 ग्राम पी.एस.बी.(स्फूरद विघटन करने वाले जीवाणु) जीवाणु संवर्धक लेप चढ़ाएँ। अथवा यह दोनों जीवाणु संवर्धक बीजामृत में मिलाकर ऊपर से लेप चढ़ाएँ। बीज खराब न हो यह ध्यान रहे। यह बीज छांव में सुखाकर 8 से 10 घंटे के अन्दर जमीन गीली हो तब बुवाई करें।

(B) द्विदल बीज के लिए बीज संस्कार करने की विधि :- चौलाई, मूंगफली, मूंग, अरहर, उड़द, वाल, मोठ, ग्वार, सन, ढैंचा, चना, सोयाबीन, लहसुन-घास इत्यादि फसल के 15 से 20 किलो बीज के ऊपर बीजामृत छिड़काएं और 250 ग्राम रायझोबियम जीवाणु संवर्धक और 250 ग्राम पी.एस.बी. (स्फूरद उपलब्ध कराने वाले) जीवाणु संवर्धक का लेप चढ़ाएँ। अथवा यह दोनों जीवाणु संवर्धक बीजामृत में मिलाकर बीज के ऊपर लेप चढ़ाएं। बीज खराब न हो यह ध्यान रहे। यह बीज छांव में सुखाकर 8 से 10 घंटे के अंदर जमीन गीली हो तब बुवाई करें।

जीवाणु खाद इस्तेमाल करने की विधि :-

(कौन-सी फसल को कौन-से जीवाणु संवर्धक का इस्तेमाल करना है, इसकी जानकारी ऊपर दी हुई है।)

एक एकड़ खेती के लिए :-

1. एक किलो रायझोबियम या एक किलो ॲझोटोबॅक्टर या एक किलो ॲझोस्पिरीलम, 25 किलो गोबर की खाद में मिलाकर ऊपर से पानी छिड़ककर एक या दो दिन तक छांव में रखें।
2. साथ में एक किलो पी.एस.बी., 25 किलो गोबर की खाद में मिलाकर ऊपर से पानी छिड़ककर एक या दो दिन तक छांव में रखें।
3. फसल की आवश्यकता नुसार पालाश की उपलब्धी कराने वाले एक किलो जीवाणु संवर्धक 25 किलो गोबर की खाद में मिलाओ। ऊपर से पानी छिड़काकर एक या दो दिन तक छांव में रखें। यह तीनों मिलाकर जमीन गीली हो तब शाम के समय जमीन में मिलाइयें। द्रव्ययुक्त जीवाणु ड्रिप से छोड़ सकते हैं।

नॅडेप पद्धति से कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि

नॅडेप पद्धति से कम्पोस्ट खाद बनाने के लिए 15 फीट लंबाई, 5 फीट चौड़ाई और 3 फीट ऊँचाई का ईंटों का चेम्बर बनाना आवश्यक है। दीवार की चौड़ाई 9 इंच मोटी हो। चारों तरफ की दीवारों में ईंट की चौड़ाई जितने होल (सुराख) रखना आवश्यक है, जिससे हवा अन्दर आयेगी। ईंटों की दीवारों को अन्दर बाहर से गोबर और पानी का मिश्रण बनाकर लपेट लें और सूखने के बाद इस चेम्बर का इस्तेमाल करें।

नॅडेप पद्धति में चेम्बर भरने के लिए खेती में से वेस्ट मटेरियल जैसे फसलों की जड़ें, तना, घासफूस या धान का भूसा, गेहूँ का भूसा, मूँगफली के टरफल, सोयाबीन का भूसा, गन्ने के पत्ते या गाय का गोबर इत्यादि का इस्तेमाल करें।

चेम्बर में पहले गोबर और पानी का मिश्रण बनाकर दीवार और नीचे भी छिड़काएं। फिर 6 इंच मोटी साइज का खेती के वेस्ट मटेरियल का थर दें। इस पर कड़वे नीम, अडुसा, ग्लेरिसिडीया के हरे पत्ते मिलाएँ।

इसके ऊपर 4 किलो देशी गाय का गोबर, 150 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएं। इसके ऊपर खेती में से 50-60 किलो मिट्टी, समान रूप से आच्छादित करें और मिट्टी गीली होने तक पानी छिड़काएं। यह एक थर (स्तर) पूरा हो गया अब ऐसे ही इसके ऊपर और थर चढ़ाएँ और चेम्बर के ऊपर डेढ़ फुट ऊंचाई तक भरते चलें। चेम्बर भरने के बाद 400-500 किलो मिट्टी गीली बनाकर 3 ईंच जितनी मोटी साइज का लेप चढ़ाएँ और ऊपर से गोबर का लेप चढ़ाएँ। धूप से मिट्टी फट जाती है तो इसे गोबर के पानी से पैक करें। ज्यादा धूप हो तो ऊपर से वेस्ट मटेरियल से आच्छादित करें। 90 से 120 दिनों में कम्पोस्ट खाद तैयार हो जायेगी। इस खाद को सूखने न दें। 20 प्रतिशत गीला रहने दें।

इसमें 3.5 से 4 टन कम्पोस्ट मिलता है। इस खाद में 0.5% से 1 प्रतिशत नायट्रोजन, 0.5% से 0.8 प्रतिशत स्फुरद और 1.2% से 1.4% पोटाश मिलता है।

केंचुऐं की खाद निर्माण करने की पद्धति

केंचुऐं की खाद निर्माण करने के लिए छाँव की आवश्यकता है। सूर्य प्रकाश और बारिश से संरक्षण के लिए छप्पर (शेड) बनाकर उसके नीचे 3 फीट चौढ़ाई और 8 से 10 फीट लम्बी जगह में डेढ़ फीट ऊँचाई की 4 इंच मोटी दीवार बनाकर चेम्बर बनाएं। पहले पानी जमीन पर छिड़ककर जमीन गीली करें। फिर पहले वेस्ट मटेरियल जैसे धान का भूसा, गेहूँ का भूसा, गन्ने के पत्ते इत्यादि जो जल्दी सड़ते नहीं है, ऐसे पदार्थों का 15 से 20 सें.मी. मोटा थर बनाइये। इस पर पानी छिड़ककर गीला बनाएं। इसके ऊपर तैयार गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट खाद अथवा बगीचे की मिट्टी का 5 सें.मी. का थर लगाएँ। इससे केंचुऐं सुरक्षित होते हैं। इसके ऊपर पूर्ण तैयार केंचुऐं छोड़ दें। प्रति 10 स्क्वेयर फीट में 2 हजार केंचुऐं छोड़ दें। इसके ऊपर बारदान से ढक देवें। 40 से 45% गीलापन रहे इसकी सम्भाल रखें। शेड में 20 से 30 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान रखें। केंचुऐं की रक्षा के लिए अन्दर कोई कीट वा चींटी न आये इस पर भी ध्यान रखना जरूरी है। एक दो दिन में आवश्यकता अनुसार पानी छिड़काएं। 30-40 दिन में पूरी तरह से केंचुऐं की खाद तैयार हो जायेगी। केंचुऐं अलग करके खाद को जमीन गीली हो तब जमीन में मिलाएँ।

फसलों का संरक्षण

प्रकृति में होने वाले बदलावों को सहन करने की शक्ति और प्रहारों का सामना करने की शक्ति कुदरत ने सभी वनस्पति पेड़ों को दी हुई है। अगर जमीन शक्तिशाली है तो वनस्पति भी शक्तिशाली बनती है। उनकी रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है। कोई भी कीट या फफूंदी जैसी बीमारी आयेगी तो भी वह ठहरेगी नहीं। लेकिन जमीन शक्तिशाली नहीं होगी तो वनस्पति कमजोर बनती है और कीट तथा बीमारी को वनस्पतियाँ प्रतिकार नहीं कर पाती हैं इसलिए कीट प्रतिबंध दवाइयों का इस्तेमाल करना पड़ता है।

कुदरत का यह नियम है कि कोई भी कीट फसल पर आती है तो उसे नष्ट करने के लिए परभक्षी कीटक भी आते हैं। लेकिन उन परभक्षी कीटकों के लिए जो पर्यावरण चाहिए वह हमने ही नष्ट कर दिया है। अभी ऐसा पर्यावरण तैयार करना बहुत आवश्यक है। इसके लिए हमारा लक्ष्य यह रहे कि पहले जमीन को शक्तिशाली बनायें और पर्यावरण निर्माण के लिए खेती में पेड़ पौधे लगायें। इसके साथ ही हमें प्रकृति के नियम अनुसार जिस सीजन में जो फसल लेनी है उस सीजन में वही फसल लेनी है। वनस्पतियाँ भी योग्य वातावरण में ही अपना संरक्षण कर सकती हैं और कम खर्चे में ज्यादा उपज मिलती है।

अगर हमने जमीन को शक्तिशाली बनाया है, पर्यावरण निर्मित भी कर रहे हैं फिर भी अचानक वातावरण बदलने से कोई कीट या बीमारी आती है तो उसके लिए कीट रोधक और फफूंदी रोधक दवाइयों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। इन दवाइयों के साथ हम योग के प्रयोग करते हैं तो कीट रोकने में 100 प्रतिशत सफलता मिलती है।

कई प्रकार की दवाइयाँ बनाने की विधि

(1) दशपर्णी अर्क :-

1. कडुवे नीम के पत्ते	- 5 किलो	7. शरीफा (सीताफल) के पत्ते	- 3 किलो
2. कन्हेर के पत्ते	- 2 किलो	8. रूई के पत्ते	- 2 किलो
3. पपीते के पत्ते	- 2 किलो	9. एरंडी के पत्ते	- 2 किलो
4. करंज के पत्ते	- 2 किलो	10. गुडवेल के पत्ते	- 2 किलो
5. काँग्रेस घास के पत्ते	- 1 किलो	11. हरी मिर्च कुटी हुई	- 2 किलो
6. सफेद धतूरा	- 2 किलो		

यह सब सीमेंट या प्लास्टिक की टंकी में 200 लीटर पानी में मिलाकर 30 से 40 दिन तक सड़ने दें। टंकी का मुख मोटे कपड़े से बांधकर रखें। प्रतिदिन मिश्रण को दो बार डंडे से घड़ी की

दिशा में हिलायें। 30-40 दिन बाद उसे छानकर 15 लीटर पानी में एक या दो लीटर (कीट की तीव्रता देखकर) मिश्रण मिलाकर कोई भी फसल पर किसी भी प्रकार की कीट के लिए छिड़काएँ। एक बार तैयार किया हुआ यह मिश्रण 6 मास तक इस्तेमाल कर सकते हैं। इस मिश्रण में 200 मि.ली. गोमूत्र मिलाना आवश्यक है।

(2) नीम अर्क :-

5 किलो कडुवे नीम के बीज को कूटकर 9 ली. पानी में रात भर भिगो दें और इसमें 500 ग्राम हरी मिर्च कूटकर मिलायें। इससे नीम अर्क अधिक प्रभावी बनता है। साथ ही एक ली. पानी में 200 ग्राम कोई भी वांशिग पाउडर भिगो दें। दूसरे दिन यह दोनों मिश्रण हिलाकर छान लें और 100 ली. पानी में मिलायें। जिस दिन इस्तेमाल करना है उससे एक दिन पहले यह मिश्रण तैयार करें। इससे कई प्रकार की कीट और फफूंदी जैसी बीमारी पर भी नियंत्रण होता है।

(3) लिफ मायनर (नागअळी) नियंत्रण के लिए :-

250 मि.ली. देशी गाय का छांछ, 50 ग्राम नींबू सत्व, 100 ग्राम गुड़, 100 मि.ली. इमली का ज्यूस, 10 ग्राम हींग, 10 ग्राम कपूर, 15 मि.ली. पानी मिलाकर स्प्रे करें। इससे कई प्रकार की कीट भाग जाती है। विशेष लिफ मायनर के लिए यह बहुत ही प्रभावी दवा है।

(4) मिलीबग्ज और थ्रिप्स (रस चूसनेवाली कीट तथा सफेद मक्खियों) के नियंत्रण के लिए :–

200 ली. पानी में 5 किलो देशी गाय का गोबर, 5 किलो गोमूत्र यह सब 24 घण्टे भिगोकर इसे छानकर स्प्रे करें। इससे डाऊनी, थ्रिप्स भी कम होती है और सभी प्रकार के अन्न द्रव्य भी फसल के लिए मिलते हैं।

अथवा

5 प्रतिशत नीम अर्क, 3 प्रतिशत गोमूत्र मिलाकर छिड़काव कर सकते है।

अथवा

15 ली. पानी, 30 ग्राम व्हर्टिसिलीयम बुरशी, 500 मि.ली. दूध मिलाकर छिड़काव कर सकते है।

(5) फफूंदी के लिए (फफूंदी रोधक) :-

ट्रायकोडर्मा एक किलो 200 ली. पानी में मिलाकर शाम के समय जमीन गीली हो तब एक एकड़ जमीन पर छिड़काएं (हो सके तो नीम की पत्तों की डाली से छिड़काएँ)

अथवा

50 किलो गोबर की खाद या 50 किलो गीली मिट्टी में ट्रायकोडर्मा एक किलो मिलाकर शाम के समय जमीन गिली हो तब एक एकड़ जमीन पर छिड़काएँ।

अथवा

ट्रायकोडर्मा एक किलो 200 ली. पानी में मिलाकर शाम के समय (धूप कम होने के बाद) फसल पर छिड़काव कर सकते हो।

अथवा

200 ग्राम वायविडंग कूटकर (आटा बनाकर) 3 लीटर गोमूत्र 200 लीटर पानी में मिलाकर दो दिन तक टंकी में रखें । टंकी का मुख मोटे कपड़े से बांधकर रखें। प्रतिदिन इस मिश्रण को दो बार डंडे से घड़ी की दिशा में हिलाएं और इसे छानकर छिड़काव कर सकते है।

अथवा

5 ली. देशी गाय का छांछ दो दिन तक तांबा (कॉपर) के बर्तन में (ज्यादा खट्टा बनने के लिए) रखकर 200 लीटर पानी के साथ 100 ग्राम हींग, 100 ग्राम हल्दी मिलाकर फसल पर फंवार सकते है।

(6) फफूंदी के प्रकार और उसके प्रति किये गये उपाय :-

1. करपा (पत्तों का जलना) के नियंत्रण के लिए :-

A) सवेरे सूर्योदय के पहले जिस दिशा से हवा आती है उस दिशा में देशी गाय के गोबर की गोणियां जलाकर धुआँ निकालें। बाद में वह राख फसल पर छिड़काएँ।

B) 5 ली. देशी गाय का छांछ दो दिन तक तांबा (कॉपर) के बर्तन में रखकर 200 ली. पानी के साथ 100 ग्राम हींग, 100 ग्राम हल्दी मिलाकर फसल पर छिड़काएँ।

2. तांबेरा (जंक चढ़ना) :- (धान, सोयाबीन, गेहूं जैसी फसल पर आने वाली बीमारी) :-

A) कडुवे नीम का तेल 100 मि.ली., करंजी का तेल 100 मि.ली., गोमूत्र 100 मि.ली, स्टीकर 10 मि.ली., (एब्सा 80, अॅमवे, 20 ग्राम साबुन पाउडर), 15 ली. पानी मिलाकर छिड़काएँ।

अथवा

B) (करपा नियंत्रण का 'B' फॉर्मुला प्रयोग कर सकते हैं।)

3. भूरी और डाऊनी मिल्ड्यू के नियंत्रण के लिये :-

A) देशी पपीते के पत्ते 2 किलो, सहजन के पत्ते 2 किलो, 4 ली. गोमूत्र, 200 ली. पानी में मिलाकर 3 दिन तक टंकी में सड़ने दें। इस मिश्रण को रोज दो बार डंडे से घड़ी की दिशा में हिलाएं और छानकर फंवारें। (टंकी के मुख को मोटे कपड़े से बांधकर रखें)

अथवा

B) (करपा नियंत्रण का 'B' फॉर्मुला प्रयोग कर सकते हैं।)

(7) सफेद लट (हुमनी) अथवा दीमक (उदई) के लिए :-

A) एक किलो बच (वेखंड) कूटकर पाउडर बनाएं। इसे 6 ली. पानी में डालकर, उस पानी को 3 ली. होने तक उबालें। यह मिश्रण ठण्डा होने के बाद 500 ग्राम हींग, 200 ली. पानी में मिलाकर एक एकड़ खेती में जमीन गीली हो तब छिड़काएँ या पानी के साथ छोड़ दें।

अथवा

B) एक किलो रूई की पौधों की गीली लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े करके 6 ली. पानी में डालकर यह पानी 3 ली. होने तक उबालें। यह मिश्रण ठण्डा होने के बाद 200 ली. पानी के साथ जमीन गीली हो तब छिड़काएँ या पानी के साथ छोड़ दें।

अथवा

C) एक किलो मेटॅरीजियम एनीसोपलीई 1.0% घुलनशील चूर्ण एक एकड़ जमीन में 50 किलो मिट्टी में या गोबर में मिलाकर जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़काएँ या पानी के साथ छोड़ दें। अथवा 100 लीटर पानी में मिलाकर शाम के समय जमीन गीली हो तब छिड़कायें।

(8) फल की साइज बढ़ाने के लिए :-

200 ग्राम जेष्ठ मध (पाउडर बनाके), 200 ग्राम तिल कूटकर 5 ली. पानी में मिलाकर पानी अढ़ाई ली. होने तक उबालें। मिश्रण ठण्डा होने के बाद 500 ग्राम गुड़ मिलाएं और 200 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।

खेती के लिए अनुकूल पर्यावरण

खेती में अनुकूल पर्यावरण तैयार करने के लिए अनेक प्रकार के वृक्ष, वनस्पतियों का उपयोग होता है। पहले खेती के बांध (मेड़) पर अनेक वृक्ष होते थे। इसके कारण पर्यावरण की संभाल होती थी। कई कारणों से आज पेड़ों की संख्या बहुत कम हो गई है। इससे मित्र कीट नष्ट हो रही है, मिट्टी अपवर्धन हो रहा है। बारिश का पानी जमीन में सींचने के लिए वृक्ष बहुत उपयोगी हैं। जोर से बहने वाली हवा, गरम हवा के झोंके, वातावरण की आर्द्रता यह सब बातें बांध के ऊपर वाले वृक्षों से नियंत्रित होती है। इसलिए हमें ऐसे वृक्ष, वनस्पति बांध पर लगाने चाहिए। खेती के बांध पर पश्चिम दिशा में नीम, पांगारा, कढ़ीपत्ता, शरीफा, गिरीपुष्प (ग्लेरिशीडिया), एरंडी, बकाना, शेवरी, रूई, सब्जा, अडूसा, करंजी इत्यादि का वृक्षारोपण करें और दक्षिण दिशा में अशोका, सुरू, सिल्वर-ओक ऐसे वृक्षों का रोपण करें। खेती में प्रति एक हजार स्क्वेयर फुट में एक तुलसी का पौधा और एक गेंदे के फूल पौधा लगाना आवश्यक है।

खेती में वृक्ष वनस्पतियों का महत्व :-

1. **कडुवे नीम का पेड़ :-** यह 250 प्रकार के विषाणुजन्य रोगों का अवरोध करता है, इससे वातावरण शुद्ध बनता है और मित्र कीटकों का आश्रय बढ़ता है।
2. **सीताफल (शरीफा) :-** मिलीबग्ज नाम की यह कीट इस वृक्ष पर बैठती है इसलिए नज़दीक वाली खेती में जो भी फसल हो उस पर यह नहीं फैलती है।
3. **कढ़ीपत्ता :-** बुलबुल जैसा पंछी उस पर घोसला बनाता है,जो अनेक कीटकों को खाता है।
4. **गेंदे के फूल :-** इस पौधों के जड़ों के कारण सूत्रकृमी (निमेटोड) का प्रतिबंध होता है और लेडीबर्ड बिटल नाम का भंवरा जो मिलीबग्ज (मावा) को खाता है, वह इन पौधों पर बैठता है।
5. **तुलसी :-** इससे ओझोन वायु का निर्माण होता है। इल्लियों के अंडे डालने वाले सफेद मक्खियों में नर पतंग उस पर बैठने से नपुंसक होता है। मच्छर भी भाग जाते है। तुलसी में 27 प्रकार के अल्कोलाइड होते हैं जिससे जमीन में फफूंदी का नियंत्रण होता है।
6. **गिरीपुष्प :-** यह वनस्पति हवा में से नायट्रोजन को स्थिर करती है। इसके पत्तों को जमीन में मिलाने से जमीन में नायट्रोजन की उपलब्धि होती है।
7. **शेवरी सुबाभळ :-** यह जानवरों के लिए अच्छा चारा है। इसका हरी खाद के रूप में भी इस्तेमाल कर सकते है।

8. **सब्जा और अडूसा :-** यह आयुर्वेदिक दवाइयाँ है। (अडुसा के पत्ते केंचुऐं की खाद बनाते समय उसका उपयोग करते हैं)

9. नीम, शरीफा, एरंडी, करंजी, रूई के पत्तों से दशपर्णी अर्क तैयार होता है जो उत्तम कीटरोधक हैं।

10. अशोका, सुरू, जैसे वृक्ष लगाने से जोर से बहने वाली हवा से फसल संरक्षण होता है।

शिव भगवानुवाच

''परमात्म स्मृति का पानी और स्व स्वरूप की धूप देकर बीज को फलीभूत बनाओ''

शाश्वत यौगिक खेती करने वाले किसानों प्रति सुझाव तथा नियमावली

(1) शाश्वत यौगिक खेती में परमात्मा का झण्डा अवश्य लहरायें।

यौगिक खेती में परमात्मा का झण्डा लहराना आवश्यक है। एक तो झण्डा देखकर मन के विचार (निगेटिव) बदल जाते हैं, अच्छी भावना रहती है। दूसरा झण्डे में लाल एवं पीले रंग से फसल की ग्रोथ पॉवर बढ़ती है और कीट नियंत्रण भी होता है। हवा के झोके से झण्डा लहराते समय सूर्य की किरणें लाल रंग पर आकर प्रतिबिंबित होकर फसल तक पहुँचने से फसल शक्तिशाली बनती है और फसल की वृद्धि होती है। पीले रंग इल्लियों के अण्डे डालने वाली मक्खियों को आकर्षित करता है। मक्खियाँ पीले रंग पर अण्डे डालती है और अण्डे से इल्लियाँ बाहर आने से खाने को कुछ नहीं मिलने से वो नष्ट होते हैं। इस प्रकार कीट नियंत्रण भी होता है। इसलिए 10 हजार स्क्वेअर फुट में एक झण्डा फसल के ऊपर 5 फुट ऊँचा करके लगायें।

(2) प्रयत्न और पुरुषार्थ से ही उन्नति सम्भव है।

(3) यौगिक खेती के लिए किसान खेती में हल चलाने से लेकर फसल की उपज को घर में लाने तक निम्नलिखित क्रम से काम करें।

1) खेती में अलग-अलग काम करते समय भिन्न-भिन्न संकल्प करें। जैसाकि योग के प्रयोग की विधि में बताया गया है।

2) चुने हुए गीत किसानों को बजाने वा सुनने के लिए प्रेरित किया जाए जैसे कि कितना सुन्दर कितना विराट होगा रचनाकार... रचा है जिसने इतना सुन्दर विशाल ये संसार...,

★ सबका मालिक एक फिर क्यों बंटा हुआ संसार...

★ मेरा गाँव मेरा देश..., गाँव का छोरा...

★ मेरे देश की धरती सोना उगले हीरे मोती..., देश भक्ति के गीत भी बजा सकते हैं।

★ पाँचों तत्वों को ध्यान में रखते हुए.. जैसे नभ में तारों की शोभा होती वैसे धरा पर... इस प्रकार के गीत वा म्यूजिक सुनते काम करने में किसानों को मजा आयेगा और फसल तथा वनस्पतियों पर भी उस खुशी का असर अच्छा पड़ेगा, पेड़ पौधे भी खुशी में झूमते रहेंगे।

नियम :-

1. खेती करने वाले किसान निर्व्यसनी हों। शराब, सिगरेट, गुटखा या अन्य किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों का प्रयोग वर्जित है।
2. पवित्रता के महत्व को समझते हुए ब्रह्मचर्य पालन करना है।
3. शुद्ध आहारी, शाकाहारी रहना है।
4. शुभ चिंतन में रहने के लिए नित्य ईश्वरीय महावाक्यों (ज्ञान मुरली) का अध्ययन वा श्रवण करना है।
5. व्यर्थ और नेगेटिव चिंतन नहीं करना हैं। व्यर्थ को समर्थ और नेगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करने की आदत डालनी है।
6. किसी से भी वैर भावना नहीं रखनी है। शुभ और शक्तिशाली भावना से सम्पन्न रहना है।
7. ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, नफरत नहीं होनी चाहिए।
8. आत्मविश्वासी, दृढ़ संकल्पधारी बनना है।
9. एकान्त प्रिय, परमात्म स्नेही बनना है।
10. अमृतवेले के महत्व को समझते हुए सवेरे उठकर प्रतिदिन योग अभ्यास करने की आदत बनायें।
11. गऊ सेवा से प्यार हो, देशी गाय की पालना करके गोबर वा गोमूत्र का प्रयोग खेती में करें।
12. किसान भाई-बहनों को वा खेती में काम करने वाले कर्मचारियों को व्यसनमुक्त बनावे और हो सके तो साप्ताहिक कोर्स भी करावे तो अच्छा है।

शिव भगवानुवाच

परमात्म निश्चय और निश्चिंत स्थिति
असम्भव को भी सम्भव कर सकता है।

अलग-अलग फसलों के लिए ध्यान देने योग्य बातें

(1) ज्वारी की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद या हरी खाद को जमीन में मिलाकर बीज बुवाई के लिए जमीन तैयार करें।
2. बीज बुवाई के समय और उसके पश्चात प्रति 20-20 दिनों के अंतरों से 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़काएँ या पानी के साथ छोड़ दें या ड्रिप द्वारा छोड़ दें।
3. फसल एक मास की होने के बाद जमीन गीली हो तब एक एकड़ में एक टन केंचुऐं की खाद जमीन में मिलाएँ।

मिक्स फसल

1. खरीफ सीजन में ज्वारी में तुअर, मूंग, उड़द जैसी फसल मिक्स करना आवश्यक है जैसे छः लाइन ज्वारी के बाद, फिर एक लाइन तुअर या दो लाइन मूंग तथा उड़द इस प्रकार मिक्स करें।
2. रब्बी सीजन में ज्वारी के साथ 10% धनिया मिक्स करके बीज बुवाई करें।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत लगाकर गीला करें, बीज के ऊपर से पहले ॲझोटोबॅक्टर या ॲझोस्पिरीलियम जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम और फिर पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम का लेप चढ़ाएं। बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घंटे में ही जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

1. पौधों के तनों में होने वाली कीट, रस चूसने वाली कीट, छोटी-बड़ी इल्लियां तथा मिलीबग्ज और भुट्टों में होने वाली इल्लियां इन सभी के लिए प्रादुर्भाव दिखते ही (इसका प्रादुर्भाव कम होने तक) हप्ते में एक या दो बार 4% गोमूत्र, नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से एक छिड़काएँ। पहले गोमूत्र, दूसरी बार नीम अर्क और तीसरी बार दशपर्णी अर्क ऐसे प्रयोग करें। (अगर तीनों ही उपलब्ध हैं तो ठीक है, नहीं हैं तो कोई भी एक ही दवा का छिड़काव कर सकते हैं।)
2. टारफुल रोग - पानी की कमी होने पर इसका प्रादुर्भाव दिखाई देता है, इसके लिए बीज को बीजामृत लगाकर 10% धनियां मिक्स करें।

(2) बाजरा की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

बाजरा के अंदर तुअर, मूंग, उड़द या मोठ जैसी फसल मिक्स करना आवश्यक है। छः लाइन बाजरा, फिर एक लाइन तुअर या दो लाइन मूंग, उड़द या मोठ में से एक – इस प्रकार मिक्स करें।

बीज संस्कार

10 ली. पानी में 2 किलो नमक मिलाकर इसमें 10 किलो बाजरा के बीज डालें और हिलाएँ। पानी के ऊपर जो बीज आते हैं उसे निकालकर अलग करें और डुबे हुए बीजों को दो-तीन बार स्वच्छ पानी से धोकर बीजों को सूखने दें। इस प्रकार बुवाई के लिए जितने बीज चाहिएँ वह सब बीज को इस प्रकार छान लेवें और इसमें से 20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें। ऊपर से पहले ॲझोटोबॅक्टर या ॲझोस्पिरीलियम जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम और फिर पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम का लेप चढ़ाएं। बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घण्टे में ही जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

कोई भी हर प्रकार की कीट या रोग का प्रादुर्भाव दिखाई दे तो हर आठ-दस दिन में एक बार पहले नीम अर्क दूसरी बार दशपर्णी अर्क और तीसरी बार 4% गोमूत्र इस प्रकार कीट या बीमारी कम होने तक छिड़काएँ। (सोसे अथवा हिंगे जैसी कीट के लिए)

(3) मकई की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

1. खरीप सीजन में दो लाइन मकई के, दो लाइन चौलाई या सोयाबीन के इस प्रकार मिक्स करना आवश्यक है।
2. रब्बी सीजन में मकई में करडई, धनिया, मेथी जैसी फसल 10% मिक्स करना आवश्यक है ।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें और ऊपर से पहले ॲझोटोबॅक्टर या ॲझोस्पिरीलियम जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम, पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम का लेप चढ़ाकर बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घण्टे के अंदर जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

तना में आने वाली कीट, सभी प्रकार की इल्लियां, रस चूसने वाली कीट मावा (मिलीबग्ज) इत्यादि के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क अदली-बदली कर स्प्रे करें।

(4) मूंगफली की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

मूंगफली में 2% सूर्य फूल मिक्स करें इससे परागीकरण बहुत अच्छा होता है। और चौलाई 2% से 5% मिक्स करें इससे मावा, (मिलीबग्ज) यह कीट चौलाई पर आती है तो मूंगफली में नहीं फैलती है।

★ मूंगफली में मूंग, उड़द जैसी फसल नहीं लेनी है।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें और ऊपर से पहले ट्रायकोडर्मा फफूंदी रोधक 100 ग्राम फिर रायझोबियम और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक प्रति 250 ग्राम का लेप चढ़ाकर बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घंटे के अंदर जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

1. मावा (मिलीबग्ज) और रस चूसने वाली मक्खियां तथा इल्लियों के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, नीम अर्क या दशपर्णी अर्क अदली-बदली कर छिड़काएँ।

2. टीका तथा तांबेरा (गंजना) के नियंत्रण के लिए 5% नीम अर्क स्प्रे करें। नीम का तेल 100 मि.ली., करंज का तेल 100 मि.ली., गोमूत्र 100 मि.ली., वाशिंग पाउडर अथवा गुड़ 10 ग्राम और 15 ली. पानी मिलाकर फंवारें।

(5) सोयाबीन की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

सोयाबीन में 2% मकई अथवा 2% ज्वारी मिक्स करें।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें और ऊपर से पहले ट्रायकोडर्मा फफूंदी रोधक 100 ग्राम, फिर रायझोबियम 250 ग्राम और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक प्रति 250 ग्राम का लेप चढ़ाकर बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घण्टे के अंदर जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

(इसके लिए मूंगफली संरक्षण का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

(6) तुअर की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

दो लाइन तुअर की और चार लाइन ज्वारी या मूंगफली या सोयाबीन या मूंग या उड़द इनमें से एक मिक्स करना आवश्यक है।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें और ऊपर से रायझोबियम और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक प्रति 250 ग्राम का लेप चढ़ाकर बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घंटे के अंदर जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

1. इल्लियां, सूत्रकृमी और मर रोग के नियंत्रण के लिए तुअर में ज्वारी मिक्स करना आवश्यक है।
2. फल-फूल लगने शुरू होते ही कीट के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र या 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क हफ्ते में एक बार अदली-बदली कर छिड़काएँ।
3. एक एकड़ फसल में 12-15 लकड़ियों का एन्टीना (T साइज का) बनाकर लगाइये, जिस पर पंछी बैठने से कीट का नियंत्रण होता है।

(7) मूंग, उड़द की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

मूंग या उड़द की चार लाइन के बाद एक लाइन मकई की या ज्वारी की मिक्स करना आवश्यक है।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें और ऊपर से रायझोबियम जीवाणु संवर्धक और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक प्रति 250 ग्राम का लेप चढ़ाकर बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घंटे के अंदर जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

सभी प्रकार की कीट और इल्लियों के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से कोई एक छिड़काएँ।

(8) चने की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद जमीन में मिलाकर बीज बुवाई के लिए जमीन तैयार करें।
2. बीज बुवाई करते समय और जब भी पानी देते हैं तब ऐसे दो-तीन बार 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब पानी के साथ या ड्रिप द्वारा देना आवश्यक है ।
3. बीज बुवाई के बाद जमीन गीली हो तब एक एकड़ जमीन में एक टन केंचुवे की खाद मिलाएं।

मिक्स फसल

1. चने की फसल के चारों ओर एक या दो लाइन मकई की लगायें। 6 लाइन चना, 3 लाइन करड़ई, और एक लाइन धनियां ऐसे मिक्स फसल लेना आवश्यक हैं।
2. मकई से मित्र कीट बढ़ती है। धनिया के ऊपर ट्रायकोग्रामा बढ़ता है, जिससे कीट नियंत्रण होता है। और मधुमक्खियों की संख्या बढ़ती है तो परागीकरण उत्तम होता है। करड़ई से पंछी ज्यादा आते हैं और इल्लियों का नियंत्रण होता है।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें और ऊपर से पहले ट्रायकोडर्मा फफूंदी रोधक 100 ग्राम, फिर रायझोबियम और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक प्रति 250 ग्राम का लेप चढ़ाकर बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घंटे के अंदर जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

1. एक एकड़ फसल में 12-15 लकड़ियों का एंटीना (T साइज का) बनाकर लगाइये, जिस पर पंछी बैठने से कीट का नियंत्रण होता है।
2. इल्लियों के नियंत्रण के लिए पहले हफ्ते में 4% गोमूत्र, दूसरे हफ्ते में 5% नीम अर्क तीसरे हफ्ते में दशपर्णी अर्क फिर 4% गोमूत्र ऐसे स्प्रे करें।

(9) गेहूँ की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

गेहूँ में राई और राजमाँ या घेवड़ा 2% से 3% मिक्स करना आवश्यक है।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत से भिगो दें और ऊपर ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम का लेप चढ़ायें। बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घंटे के अंदर जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

(इसके लिए मूंगफली संरक्षण का ही फार्मुला प्रयोग में ला सकते हैं।)

और साथ में फसल में अनाज भरते समय दो बार 5 प्रतिशत छांछ (दो दिन तांबा के बर्तन में रखकर) छिड़काने से गेहूँ की चमक बढ़ती है।

(10) चावल (धान) की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

और साथ साथ फसल एक मास की होने पर एक एकड़ जमीन में एक टन केंचुवे की खाद और 60 किलो अनाज की खाद जमीन में मिलायें।

मिक्स फसल

धान की फसल में 5% नाचना और तिल मिक्स करना आवश्यक है।

बीज संस्कार

10 लीटर पानी में 300 ग्राम नमक मिलाकर इसमें 10 किलो धान के बीज डालें, पानी के ऊपर जो बीज आते हैं उसे निकालकर फेंक दें। और डूबे हुए बीज को दो-तीन बार स्वच्छ पानी से धोकर बीज को सूखने दें। इस प्रकार बुवाई के लिए जितने बीज चाहिएँ वह सब बीज छान लेवें। और इसमें से 20 किलो बीज को बीजामृत छिड़ककर भिगो दें और ऊपर से पहले ट्रायकोडर्मा 50 ग्राम फिर ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम का लेप चढ़ायें। बीज को छांव में सूखने दें। आठ-दस घंटे से पहले ही जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें। अगर पौधे उखाड़कर लगाना है तो 5 ली. बीजामृत में 250 ग्राम ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु संवर्धक और 250 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक मिलाकर पौधों की जड़ें इसमें 15 या 20 मिनिट तक डुबोकर रखें फिर लगाइये।

फसल संरक्षण

1. रस चूसने वाली कीट तथा इल्लियों के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से एक अदली बदली कर छिड़काव करें।

2. पौधे मरते हैं तो एक एकड़ में एक किलो ट्रायकोडर्मा फफूंदी 200 ली. पानी में मिलाकर जमीन पर बीज बुवाई के बाद तुरंत छिड़के या फसल (पौधों) पर छिड़काएँ।
3. करपा (पत्तों का जलना) - देशी बबूल के अंकुरित पत्ते 200 ग्राम, 2 ली. पानी में डालकर उस पानी को एक ली. होने तक उबालें। यह मिश्रण 200 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ। अथवा देशी गाय का कच्चा दूध 5 ली. 2 ली गोमूत्र अथवा 2 ली नारियल पानी को 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काएँ।

(11) कपास की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

(इसके लिए ज्वारी जमीन को शक्तिशाली बनाने का ही फार्मुला प्रयोग करें।)

मिक्स फसल

कपास की खेती के चारों ओर मकई की एक लाईन लगायें। कपास की लाइन में भी एक कपास का पौधा और एक मकई ऐसे मिक्स करें। कपास की दो लाइन के बीच में मूंग, उड़द या सोयाबीन जैसी फसल मिक्स करें। कपास की 8 लाइन के बाद एक लाइन चौलाई की लगायें। प्रति एक हजार स्क्वेअर फुट में एक पौधा गेंदे के फूल का और एक पौधा तुलसी का भी लगायें।

बीज संस्कार

20 किलो बीज को बीजामृत में भिगो दें और उपर से पहले 100 ग्राम ट्रायकोडर्मा फफूंदी फिर 250 ग्राम ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु संवर्धक और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक 250 ग्राम का लेप चढ़ायें। बीज को छांव में सुखाकर आठ-दस घंटे के अंदर ही जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

1. रस चूसने वाली कीट तथा इल्लियों के नियंत्रण के लिए हफ्ते में एक बार 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से एक अदली बदली कर छिड़काएँ।
2. पत्तों के ऊपर दाग (स्पॉट) दिखाई दे तो 25 ग्राम ट्रायकोडर्मा, 50 मि.ली. दूध, 10 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।
3. पौधे मर जाते या जड़ें सड़ने लगती हैं तो एक किलो ट्रायकोडर्मा 200 ली. पानी के साथ जमीन गीली हो तब छोड़ दें।

4. लिफ मायनर - 15 ली. पानी, 250 मि.ली. छांछ, 50 ग्राम नींबू सत्व, 100 ग्राम गुड़, 100 मि.ली. इमली का ज्यूस, 10 ग्राम हींग, 10 ग्राम कपूर मिलाकर छिड़काएँ।
5. करपा (पत्तों का जलना) - इसके लिए देशी बबूल के अंकुरित पत्ते 200 ग्राम, 2 ली. पानी में डालकर पानी एक ली. होने तक उबालें। यह मिश्रण 100 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।

★ 200 ग्राम वायविडंग कूटकर 2 ली. पानी में डालकर इसे एक ली. पानी होने तक उबालें। 5 ली. दूध उबालकर मलाई निकालें यह दोनों 200 ली. पानी में डालकर छिड़काएँ।

★ सवेरे सूर्योदय होने से पहले जिस दिशा से हवा आती है उस दिशा में देशी गाय के गोबर की गोणीयां जलाकर धुआँ निकालें। यह राख फसल पर छिड़काएँ।

(12) गन्ने की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद या हरी खाद जमीन में मिलाकर बीज बुवाई के लिए जमीन तैयार करें।
2. बीज बुवाई से पहले एक बार सरी में 60 किलो अनाज की खाद एक एकड़ जमीन में मिला दें। फिर फसल 4 मास की होने के बाद भरनी करते समय (मिट्टी चढ़ाते समय) 60 किलो और बारिश के समय (जून मास) में 60 किलो अनाज की खाद जमीन में मिलायें।
3. फसल 4 मास की होने बाद भरनी करते समय (गन्ने को मिट्टी चढ़ाते समय) एक एकड़ जमीन में (जमीन गीली हो तब) एक टन केंचुवे की खाद जमीन में मिलायें।
4. बीज बुवाई के समय एक एकड़ के लिए 200 ली. जीवामृत पानी के साथ या जमीन गीली हो तब छोड़ दें। फिर मास में एक- एक बार ऐसे एक साल तक 200-200 ली. जीवामृत पानी के साथ या ड्रिप द्वारा छोड़ दें या जमीन गीली हो तब छिड़कायें।
5. गन्ने की भरनी करते समय (मिट्टी चढ़ाते समय) और जून मास में ऐसे दो बार जीवामृत में एक किलो ॲझोटोबॅक्टर जीवाणु संवर्धक या ॲझोस्पिरीलियम जीवाणु संवर्धक, पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक एक किलो और पालाश की उपलब्धि कराने वाले जीवाणु संवर्धक एक किलो मिलाकर पानी के साथ या जमीन गीली हो तब छोड़ दें।

बीज संस्कार

200 ली. बीजामृत में एक किलो ट्रायकोडर्मा, 2 किलो ॲझोटोबॅक्टर और 2 किलो पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक मिलाकर उसमें आधा घण्टा तक बीज को डुबोकर रखें फिर बुवाई करें।

फसल संरक्षण

1. रस चूसने वाली कीट तथा तना के अंदर आनेवाली कीटों के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से एक अदली बदली कर फंवारें।
2. मावा तथा मिलीबग्ज के लिए 30 ग्राम व्हर्टिसिलीयम पाउडर, 50 मि.ली. दूध 15 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

(13) बैंगन की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद जमीन में मिलाकर बीज बुवाई के लिए जमीन तैयार करें।
2. पौधे लगाने के बाद 15 दिन से पौधे के नजदीक आधा फुट के अंतर से हर पौधे को 50 ग्राम केंचुवे की खाद जमीन गीली हो तब जमीन में मिला दें।
3. पौधे लगाते समय 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़कायें या पानी के साथ छोड़ दें। पश्चात प्रति 20 दिनों के अंतरों से 200-200 ली. जीवामृत का प्रयोग करें।
4. पौधे लगाते समय, फल-फूल लगते समय और इसके तीन मास बाद ऐसे तीन बार, नत्र, स्फुरद और पोटाश की उपलब्धि कराने वाले जीवाणु संवर्धक प्रति एक किलो जीवामृत में मिलाकर छोड़ दें।
5. फल-फूल लगते समय और तीन मास बाद ऐसे दो बार 30 किलो अनाज की खाद और एक टन केंचुवे की खाद जमीन में जमीन गीली हो तब मिला दें।
6. नीम का पाउडर 50 किलो मास में एक बार पौधों के ऊपर से जमीन पर छिड़काएं।

मिक्स फसल

बैंगन के चारों तरफ दो लाइन मकई, एक लाइन चौलाई, आठ लाइन बैंगन, एक लाइन गेंदे के फूल के पौधे फिर बैंगन इस प्रकार से मिक्स करें। प्रति एक एकड़ में एक तुलसी का पौधा अवश्य लगायें।

बीज संस्कार

1. 100 ग्राम बीज को बीजामृत में भिगो दें। और उपर से पहले 2 ग्राम ट्रायकोडर्मा फफूंदी फिर 2 ग्राम अॅझोटोबॅक्टर और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक 2 ग्राम का लेप चढ़ाकर जमीन में बुवाई करें। ऊपर से एक लीटर जीवामृत पानी में मिलाकर सिंचाई करें। जहाँ बीज बुवाई करनी है वहाँ गोबर की और केंचुवे की खाद जमीन में अवश्य मिलायें।
2. पौधे लगाने से पहले 10 ली. पानी में 40 ग्राम ट्रायकोडर्मा और 500 मि.ली. नीम अर्क मिलाकर पौधों की जड़ें तीन घंटों तक डुबोकर रखें। फिर जड़ों को अॅझोटोबॅक्टर और पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक लगाकर पौधे लगायें।

फसल संरक्षण

1. बीज अंकुरित होने के बाद 15 दिन में 3% गोमूत्र या 5% नीम अर्क छिड़काएँ।
2. रस चूसने वाली कीट, पौधों के तना में और बैंगन में आने वाली कीट के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से एक अदली बदली कर छिड़काव करें।

(14) पत्तागोभी और फूलगोभी की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद जमीन में मिलाकर बीज बुवाई के लिए जमीन तैयार करें।
2. पौधे लगाते समय फिर प्रति 20 दिन के बाद 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़कायें या पानी के साथ छोड़ दें।
3. फसल एक मास की होने के बाद एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब केंचुवे की खाद, 60 किलो अनाज की खाद और नत्र, स्फुरद और पालाश की उपलब्धि कराने वाले जीवाणु संवर्धक प्रति एक किलो मिलाकर जमीन में छोड़ दें।
4. नीम की खली (पाउडर) 50 किलो मास में एक बार फसल के ऊपर से जमीन पर छिड़कायें। जिससे कई प्रकार की कीट और फफूंदी जैसे रोगों का प्रतिबंध होता है।

मिक्स फसल

फसल की चारों ओर दो लाइन मकई, एक लाइन चौलाई, 20 लाइन पत्तागोभी, एक लाइन सरसों की फिर 20 लाइन पत्तागोभी या फूलगोभी इस प्रकार मिक्स करे। 20 लाइन पत्तागोभी में 2% मकई और प्रति एक हजार स्क्वे. फीट में एक पौधा गेंदे और एक पौधा तुलसी लगायें।

बीज संस्कार

1. 100 ग्राम बीज को बीजामृत में भिगो दें। और ऊपर से पहले 2 ग्राम ट्रायकोडर्मा फफूंदी फिर 2 ग्राम अॅझोटोबॅक्टर और 2 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक का लेप चढ़ाकर जमीन में बुवाई करें। जहाँ बीज बुवाई करनी है वहाँ गोबर की अथवा केंचुवे की खाद जमीन में अवश्य मिलायें। बीज बुवाई के बाद पानी के साथ एक लीटर जीवामृत की सिंचाई करें।
2. पौधे लगाने से पहले 2 ली. जीवामृत में 50 ग्राम ट्रायकोडर्मा फफूंदी, 250 ग्राम अॅझोटोबॅक्टर और 250 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक मिलाकर पौधों की जड़े 15 मिनट तक डुबोकर रखें फिर पौधे लगायें।

फसल संरक्षण

1. पौधे छोटे हैं तब 3% गोमूत्र या 5% नीम अर्क फंवारें।
2. रस चूसने वाली कीट और इल्लियों के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से एक अदली बदली कर छिड़काएँ। ज्यादा दिखाई दें तो 30 ग्राम व्हर्टिसिलीयम पाउडर, 50 मि.ली. दूध, 15 ली. पानी में मिलाकर फंवारें।
3. एक एकड़ खेती में 12-15 लकड़ियों का एंटीना (T साइज का) बनाकर लगाइये, जिस पर पंछी बैठने से कीट का नियंत्रण होता है।

(15) मिर्च की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद या हरी खाद जमीन में मिलाकर पौधे लगाने के लिए जमीन तैयार करें।
2. पौधे लगाते समय और बाद में प्रति 20 दिन के बाद 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब छिड़कायें या पानी के साथ छोड़ दें।
3. फल-फूल लगते समय एक एकड़ जमीन के लिए एक टन केंचुवे की खाद और 60 किलो अनाज की खाद और ट्रायकोडर्मा फफूंदी एक किलो, अॅझोटोबॅक्टर एक किलो, पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक एक किलो मिलाकर जमीन गीली हो तब एक एकड़ जमीन में मिला दें।
4. नीम की खली (पाउडर) 50 किलो, एक एकड़ में पौधों के ऊपर से जमीन पर छिड़कायें।

मिक्स फसल

1. फसल की चारों ओर दो लाइन मकई, एक लाइन तिल की, 10 लाइन मिर्च की, एक लाइन गेंदे के फूल के पौधे फिर मिर्च इस प्रकार करें।
2. प्रति एक हजार स्क्वेअर फुट में एक तुलसी का पौधा और बड़ी सौंफ लगाना आवश्यक है।

★ मकई और तिल लगाने से पत्तों का जकड़ना उस पर नियंत्रण होता है।

★ गेंदे के फूल के पौधों से सूत्रकृमीयों का अटकाव (अवरोध) होता है।

★ बड़ी सौंफ से मक्खी आती है परागीकरण (परागीभवन) होने में मदद मिलती है।

★ तुलसी में 27 प्रकार के अल्कोलाइड होते हैं जिससे मिर्ची के पौधों के जड़ों का सड़ना और पौधे मरना बंद होता है। इससे ओझोन वायु का भी निर्माण होता है।

बीज संस्कार

1. 100 ग्राम बीज को बीजामृत में भिगो दें और ऊपर से पहले एक ग्राम ट्रायकोडर्मा फिर 2 ग्राम ॲझोटोबॅक्टर और 2 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक का लेप चढ़ाकर बीज जमीन में बुवाई करें। जहाँ बीज बुवाई करनी है वहाँ गोबर की खाद अथवा केंचुवे की खाद जमीन में अवश्य मिलायें। बीज बुवाई के बाद पानी के साथ एक लीटर जीवामृत की सिंचाई करें।
2. पौधे लगाने से पहले 2 ली. बीजामृत में 50 ग्राम ट्रायकोडर्मा, 250 ॲझोटोबॅक्टर और 250 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक मिलाकर पौधों की जड़ें आधा घंटे तक डुबोकर रखें फिर पौधे लगायें।

फसल संरक्षण

1. बीज अंकुरित के बाद 3% गोमूत्र अथवा 5% नीम अर्क पौधों पर छिड़कें।
2. रस चूसने वाली कीट और पत्तों का जकड़ना जैसी कीट के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी अर्क में से एक अदली बदली कर छिड़काव करें।
3. पत्तों का जकड़ना - इसके लिए 5 ली. छांछ (देशी गाय का) दो दिन तक तांबे के बर्तन (कॉपर पॉट) में रखकर 200 ग्राम व्हर्टिसिलीयम फफूंदी, 100 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।

(16) टमाटर की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद या हरियाली की खाद जमीन में मिलाकर पौधे लगाने के लिए जमीन तैयार करें।
2. पौधे लगाते समय और बाद में प्रति 20 दिन के बाद 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़कायें या पानी के साथ छोड़ दें।
3. फल-फूल लगते समय एक एकड़ जमीन के लिए एक टन केंचुवे की खाद, 60 किलो अनाज की खाद और ट्रायकोडर्मा फफूंदी एक किलो, नत्र, स्फुरद और पोटाश की उपलब्धि कराने वाले जीवाणु संवर्धक प्रति एक किलो मिलाकर जमीन गीली हो तब जमीन में छोड़ दें।
4. नीम की खली 50 किलो, एक एकड़ में पौधों के ऊपर से जमीन पर छिड़कायें।

मिक्स फसल

1. फसल के चारों ओर एक लाइन मकई, एक लाइन चौलाई, 15 लाइन टमाटर की फिर एक लाइन चौलाई और एक लाइन गेंदे के फूल के पौधे इस प्रकार मिक्स करें।
2. टमाटर की 15 लाइन में भी 2% मकई अवश्य मिक्स करें। एक हजार स्क्वे.फीट में एक तुलसी का पौधा लगाना भी आवश्यक है।

बीज संस्कार

1. बीज को कपड़े में बांधकर रात भर गोमूत्र में डुबोकर रखें, फिर उस बीज को सुखाके बीजामृत लगाकर ऊपर से 100 ग्राम बीज के लिए 2 ग्राम ट्रायकोडर्मा फिर 2 ग्राम ॲझोटोबॅक्टर और 2 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक का लेप चढ़ाकर बीज जमीन में बुवाई करें। जहाँ बीज बुवाई करनी है वहाँ गोबर की खाद अथवा केंचुवे की खाद, नीम का पाउडर जमीन में अवश्य मिलायें।
2. पौधे लगाते समय 2 ली. बीजामृत में 50 ग्राम ट्रायकोडर्मा, 250 ग्राम ॲझोटोबॅक्टर और 250 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक मिलाकर पौधों की जड़ें आधा घण्टे तक डुबोकर रखें फिर पौधे लगायें।

फसल संरक्षण

1. रस चूसने वाली कीट और इल्लियों के नियंत्रण के लिए 4% गोमूत्र, 5% नीम अर्क या दशपर्णी

अर्क में से एक अदली बदली कर स्प्रे करें। (एक टाइम एक ही दवा का छिड़काव करें)

2. एक एकड़ खेती में 12-15 लकड़ियों का एंटीना (T साइज का) बनाकर लगाइये, जिस पर पंछी बैठने से कीट का नियंत्रण होता है।

3. कीट का प्रभाव ज्यादा दिखाई दें तो 30 ग्राम व्हर्टिसिलीयम पाउडर, 50 मि.ली. दूध, 15 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।

4. लिफ मायनर - 15 ली. पानी, 250 मि.ली. छांछ, 10 ग्राम हींग, 50 ग्राम नींबू सत्व, 100 ग्राम गुड़, 100 मि.ली. इमली का ज्यूस, 10 ग्राम कपूर मिलाकर छिड़काएँ।

5. करपा (पत्तों का जलना) -

★ देशी बबूल के अंकुरित पत्ते 200 ग्राम, 2 ली. पानी में डालकर पानी एक ली. होने तक उबालें। यह मिश्रण 200 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।

अथवा

★ 200 ग्राम वायविडंग कूटकर 2 ली. पानी में डालकर यह पानी एक ली. पानी होने तक उबालें। 5 ली. दूध उबालकर मलाई निकालें यह दोनों 200 ली. पानी में डालकर छिड़काएँ।

अथवा

★ सवेरे सूर्योदय होने से पहले जिस दिशा से हवा आती है उसी दिशा में देशी गाय के गोबर की गोणियां जलाकर धुआँ निकालें और गोणियों की राख को फसल पर छिड़काएँ।

(17) ककड़ी, करेला, तुरई और कद्दू की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 6 टन गोबर की खाद या हरी खाद जमीन में मिलाकर पौधे लगाने के लिए जमीन तैयार करें।

2. बीज बुवाई करते समय और बाद में प्रति 20 दिन के बाद 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़काएँ या पानी के साथ छोड़ दें।

3. फल-फूल लगते समय एक एकड़ जमीन के लिए एक टन केंचुवे की खाद, 60 किलो अनाज की खाद और ट्रायकोडर्मा फफूंदी एक किलो और नत्र, स्फुरद तथा पोटाश की उपलब्धि कराने वाले जीवाणु संवर्धक प्रति एक किलो मिलाके जमीन में छोड़ दें।

मिक्स फसल

1. फसल के चारों ओर एक लाइन मकई, एक लाइन चौलाई, 5% मकई मिक्स करना आवश्यक है।
2. प्रति एक हजार स्क्वेअर फुट जमीन के लिए एक तुलसी का और एक गेंदे का पौधा लगाना भी आवश्यक है।

बीज संस्कार

100 ग्राम बीज को बीजामृत में भिगोकर पहले 2 ग्राम ट्रायकोडर्मा फिर 5 ग्राम ॲझोटोबॅक्टर और 5 ग्राम पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक का लेप चढ़ायें। बीज को छांव में सुखाकर आठ-दस घण्टे के अंदर ही जमीन गीली हो तब बीज बुवाई करें।

फसल संरक्षण

1. रस चूसने वाली कीट और इल्लियों के नियंत्रण के लिए शुरू से ही हफ्ते में एक बार 4% गोमूत्र, दूसरे हफ्ते में 5% नीम अर्क और तीसरे हफ्ते में दशपर्णी अर्क ऐसे अदली-बदली कर छिड़काएँ।
2. कीट का प्रभाव ज्यादा दिखाई दे तो 30 ग्राम व्हर्टिसिलीयम पाउडर, 50 मि.ली. दूध, 15 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।
3. लिफ मायनर के लिए 15 लीटर पानी, 250 मि.ली. छांछ, 10 ग्राम हींग, 50 ग्राम नींबू सत्व, 100 ग्राम गुड़, 100 मि.ली. इमली का ज्यूस, 10 ग्राम कपूर मिलाकर छिड़काएँ।
4. करपा (पत्तों का जलना) -

★ देशी बबूल के अंकुरित पत्ते 200 ग्राम, 2 ली. पानी में डालकर पानी एक लीटर होने तक उबालें। यह मिश्रण 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काएँ।

अथवा

★ 200 ग्राम वायविडंग कूटकर 2 लीटर पानी में डालकर यह पानी एक लीटर पानी होने तक उबालें। 5 लीटर दूध उबालकर मलाई निकालकर यह दोनों 200 लीटर पानी में डालकर छिड़काएँ।

अथवा

★ सवेरे सूर्योदय होने से पहले जिस दिशा से हवा आती है उसी दिशा में देशी गाय के गोबर की गोणियां जलाकर धुआँ निकालें और उस गोणियों की राख को फसल पर छिड़कायें।

(18) केले की फसल :-

जमीन को शक्तिशाली बनाने के लिए

1. प्रति एकड़ 10 टन गोबर की खाद जमीन में मिलाकर पौधे लगाने के लिए जमीन तैयार करें।
2. पौधे लगाने के बाद बीच में हरियाली की खाद लेकर जमीन पर आच्छादित करें या जमीन में मिला दें।
3. पौधे लगाकर एक मास होने के बाद पौधों के बाजू में एक टन केंचुवे की खाद और 60 किलो अनाज की खाद मिलाकर जमीन गीली हो तब जमीन में मिलाएं।
4. मास में एक बार 200 ली. जीवामृत एक एकड़ जमीन में जमीन गीली हो तब शाम के समय छिड़कायें या पानी के साथ छोड़ दें।

मिक्स फसल

1. फसल के चारों ओर शेवरी जैसी वृक्ष की दीवार बनाएं।
2. बीच में 5% सहजन के पौधे मिक्स करें।

बीज संस्कार

पौधे लगाने के लिए पहले खड्डा बनायें। फिर 200 ली. बीजामृत में एक किलो ट्रायकोडर्मा फफूंदी रोधक, 2 किलो ॲझोटोबॅक्टर और 2 किलो पी.एस.बी. जीवाणु संवर्धक मिलाकर पौधों की जड़ों को इस मिश्रण में डुबोकर लगायें या खड्डे में ही 250 मि.ली. इस मिश्रण डाल करके पौधा लगा सकते हैं।

फसल संरक्षण

1. करपा (पत्तों का जलना) - इसके लिए देशी बबूल के अंकुरित कोमल पत्ते 200 ग्राम, 2 ली. पानी में डालकर पानी एक लीटर होने तक उबालें। यह मिश्रण 200 ली. पानी में मिलाकर छिड़काएँ।
2. पाँच ली. दूध उबालकर ठण्डा होने के बाद मलाई निकालें। 200 ग्राम वायविडंग कूटकर 2 ली. पानी में डालकर यह पानी एक ली. पानी होने तक उबालें। यह दोनों मिश्रण 200 ली. पानी में डालकर छिड़काएँ।
3. सवेरे सूर्योदय होने से पहले जिस दिशा से हवा आती है उस दिशा में देशी गाय के गोबर की गोणियां जलाकर धुआँ निकालें और उस गोणियों की राख को फसल पर छिड़कायें।

यौगिक खेती द्वारा भिन्न-भिन्न फसलों के उत्पादन

नागेश विट्ठल कुलकर्णी, मु.पो. साखराळे, ता. वाळवा, जि. सांगली
क्षेत्रफल : 1.5 एकड़, सोयाबीन
उत्पादन : 23 क्विंटल, उत्पादन खर्च : 2500 रूपये

पाण्डुरंग सुदाम पाटील, मु.पो. जुने खेड, ता.वाळवा, जि.सांगली
क्षेत्रफल : 22,000 स्क्वायर फिट, शंकरकन्द
उत्पादन : 7 मेट्रिक टन, उत्पादन खच : 5,000 रूपये

भोलानाथ शिवलिंगा चौगुले, मु.पो. टाकवडे, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
क्षेत्रफल : एक एकड़, गन्ना
उत्पादन : 60 मेट्रिक टन, उत्पादन खर्चा : 8,100 रूपये

सचिन दादासो गोधडे, मु.पो. टाकवडे, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
क्षेत्रफल : एक एकड़, गन्ना
उत्पादन : 50 मेट्रिक टन, उत्पादन खर्च : 8,000 रूपये